जय श्रीकृष्ण

श्रीमद्भागवत संदेश

6

शरद अंक

शुभ दीपावली

संरक्षक :

भागवत भास्कर

श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री (ठाकुरजी)

श्रीसनातन मन्दिर, लीस्टर (यू.के.) में
आयोजित श्रीमद्भागवत सप्ताह
की झलकियाँ.

संरक्षक :

- भागवत भास्कर
  श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठाकुरजी'

प्रकाशक :

- श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
  रमणरेती, वृन्दावन–281121

सम्पादक :

- पं. श्रीकिशन लाल जी शास्त्री
  भागवत मर्मज्ञ

सह सम्पादक :

- पं. बिष्णु पाठक (सारस्वत), कोलकाता
  ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ
  दूरभाषः 9331033090

सम्पादक मण्डल

- श्रीदेवकीनन्दन जोशी, कटक
- श्रीमती मीना अग्रवाल, दिल्ली
- श्री विनय पाठक, मथुरा
- श्रीमती बृजबाला गौड़, वृन्दावन
- डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया, वृन्दावन

पत्राचारः

- श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
  श्रीभागवत कृपा निकुंज
  रमणरेती, वृन्दावन–281121 (मथुरा), उ.प्र.
  दूरभाष : 0565–2540857, 9897042861

मुद्रण–संयोजन :

- श्रीहरिनाम प्रेस
  बाग बुन्देला, लोई बाजार
  वृन्दावन. फोन : 2442415

श्रीमद्भागवत सन्देश

6
शरद अंक

श्रीगोपी गीत

ब्रजजनार्तिहन् वीर योषितां
निजजनस्मयध्वंसनस्मित।
भज सखे भवत्किङ्करीः स्म नो
जलरुहाननं चारु दर्शय।।6।।

श्रीमद्भागवत–10/31/6

स्वजन वृन्द के गर्व को हरो,
मधुर मन्द मुस्कान से विभो !
भज हमें हरे निर्बला सभी,
हम, अहो रमानाथ ! वीर तूँ।।
व्रजनिवासियों के सदा सभी,
दुसह दुःख को नाशिये तथा।
हम अमोल दासीन को सखे,
मुख सरोज को दिखलाइये।।

• हिन्दी पद्यानुवाद : श्रीरामानुज शास्त्री जी •

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

1 : **श्रीगोपीगीत :** पद्यानुवाद सहित

2 : **कथा के आगामी कार्यक्रम** : समाचार

3 : **सम्पादकीय / सह सम्पादकीय**

4 : **पं. श्रीकृष्णचन्द्रजी (श्रीठाकुरजी) :** एक परिचय

5 : **अमृत बिन्दु :** पं. श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री

7 : **विज्ञान विमर्श :** पं. श्रीरामानुज जी शास्त्री

10 : **श्री वृन्दावन महिमा :** श्रीकिशनलाल जी शास्त्री

13 : **भक्तों के प्रकार :** व्रजविभूति श्रीश्यामदास जी

15 : **धन्या ब्रज वसुन्धरा :** श्री सौरभ गौड़

18 : **नवग्रह पूजन :** पं. श्रीबिष्णु पाठक

21 : **जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि :** श्री सुदर्शन सिंह चक्र

23 : **व्रज के सन्त :** पं. श्रीरामकृष्ण दास बाबाजी

27 : **सन्तों के सम्प्रदाय... :** श्रीविष्वक्सेनाचार्य जी

30 : **नव दुर्गा :** कविवर श्रीराधागोविन्द पाठक

31 : **भक्ति–रस :** डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया

35 : **वास्तु–एक दृष्टि में :** संकलित

36 : **व्रत पर्व : 6 दिसम्बर से 3 फरवरी 2011 तक**

40 : **श्री कृष्ण प्रेम संस्थान के सेवा प्रकल्प**

श्री ठाकुर जी के आगामी कार्यक्रम

19 नव. से 26 नव. 2010	चण्डीगढ़ (लाइव टेलीकास्ट – जी.टी.वी. जागरण)	(भागवत कथा)
29 नव. से 05 दिस. 2010	महालक्ष्मी मंदिर, कोलकाता	(भागवत कथा)
07 दिस. से 14 दिस. 2010	कृष्ण बलराम गौशाला, मथुरा–वृन्दावन रोड, वृन्दावन (लाइव टेलीकास्ट – संस्कार चैनल)	(भागवत कथा)
18 दिस. से 25 दिस. 2010	काकुड़गाछी बड़ा पार्क, कोलकाता (D - लाइव – संस्कार चैनल)	(भागवत कथा)
26 दिस. से 04 जन. 2011	छप्पन भोग मैदान, कोटा (राज.)	(भागवत कथा)
19 जन. से 26 जन. 2011	राम मंदिर, शालीमार बाग, दिल्ली (लाइव टेलीकास्ट – जी.टी.वी. जागरण)	(भागवत कथा)

सम्पादकीय

भगवद्–रस–पिपासुजन,

भागवत संदेश का प्रस्तुत अंक सुहृद पाठकों के कर–कमलों में है। यह समय त्यौहारों का समय है। नवरात्रि, विजयादशमी, शरद पूर्णिमा, दीपावली, अन्नकूट, भाईदूज आदि अनेकानेक शुभ अवसरों को आपने धूमधाम से मनाया होगा। हिन्दू संस्कृति में इन त्योहारों का अपना एक अलग ही महत्व है। एक विशेष बात यह है कि ये त्यौहार किसी न किसी रूप में अध्यात्म से संबद्ध हैं। जैसे नवरात्रि–माँ दुर्गा की अर्चना का विशेष समय, विजयादशमी–भगवान् राम की विजय का प्रतीक, शरद पूर्णिमा–श्रीराधाकृष्ण की अलौकिक रासलीला की स्मृति दिलाने वाला, दीपावली–महालक्ष्मी पूजन का अवसर, अन्नकूट ब्रज की रक्षा के लिए श्री गिरिराज गोवर्धन को अनेकानेक व्यंजनों का भोग लगाकर कृतज्ञता ज्ञापन करने का स्मरणीय अवसर और भाई दूज अथवा यमद्वितीया–यमराज से बहनों द्वारा अपने भाईयों की दीर्घायु की कामना का पर्व। कहने का तात्पर्य यह है कि हम सनातन धर्मियों का प्रत्येक कृत्य प्रभु में आस्था और श्रद्धा व्यक्त करने वाला है। कोई भी अवसर हो–कुल मिलाकर हमें भगवद्–आसधन का अवसर खोजना। यही विशेषता है हमारे हिन्दू धर्म की जो हिन्दुस्तान को विश्व में धर्मगुरु के रूप में प्रतिष्ठापित करता है। प्रयास करें कि हर आनन्द के अवसर पर प्रभु का पावन स्मरण बना रहे। इसी के साथ, जय श्रीकृष्ण।

— पं. किशन लाल

सह सम्पादकीय

श्रीकृष्ण प्रेमी भक्तगण,

आदरणीय पंडित जी ने सार का सार आपके समक्ष प्रस्तुत किया है। यह त्यौहारों का महीना है–कार्तिक मास। इसे दामोदर मास भी कहते हैं। इसी महीने में भगवान् बालकृष्ण ने ऊखल बंधन लीला की थी। माँ यशोदा ने उन्हें कमर में रस्सी डालकर बाँधने का प्रयास किया था। दामः उदरे यस्य सः –दामोदर। अर्थात् यह मास प्रभु की लीला चिन्तन का विशेष अवसर है। श्रीहरिभक्तिविलास में लिखा है कि इस मास में किये गये व्रत–जप–धार्मिक अनुष्ठान आदि का फल अन्य मासों में किये गये पुण्य कर्मों के फल की अपेक्षा एक सौ गुना अधिक होता है। अतः प्रभु का स्मरण करें और चिन्तन करें। अगले अंक में पुनः आपके समक्ष अपनी बात रखेंगे।

समस्त मंगल कामना सहित.....

— पं. बिष्णु पाठक (सारस्वत)
ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ

अति सहज व्यक्तित्व

श्रद्धेय पं. श्रीकृष्णचन्द्र जी शास्त्री (ठाकुरजी)

वैदिक आध्यात्मिक व्यास परम्परा के प्राणाधार श्रद्धेय पं. श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री (ठाकुरजी) का जन्म वृन्दावन के निकट लक्ष्मणपुरा ग्राम (मथुरा, उ.प्र.) में 1 जुलाई 1960 में हुआ। पं. श्रीरामशरण उपाध्याय और श्रीमती चन्द्रवती देवी की इस मेधावी सन्तान ने अपने पितामह पं. भूपदेव उपाध्याय से बचपन में ही रामायण एवं कृष्ण-चरित्र का मनोयोग से श्रवण किया।

श्रीठाकुरजी को प्रारम्भिक शिक्षा के समय ही वीतराग श्रीस्वामी रामानुजाचार्यजी महाराज का सानिध्य मिला, जिनसे इन्हें गीता, बाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त की भी शिक्षा मिली। श्रीजगन्नाथपुरी स्थित श्रीजीयर स्वामी पीठ के मठाधीश श्रीगरुड़ध्वजाचार्यजी से श्रीवैष्णव दीक्षा प्राप्त हुई तथा श्रीवैष्णव दीक्षा देने का अधिकार भी मिला।

व्याकरण में आचार्य और दर्शन शास्त्र में एम.ए. की उपाधि से विभूषित श्रीठाकुरजी ने शास्त्रीय संगीत का भी अध्ययन किया। श्रीठाकुरजी सम्भवत: देश के प्रथम ऐसे व्यास हैं, जो मात्र 50 वर्ष की आयु में श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा के 935 विशाल आयोजन कर चुके हैं। आपकी कथा शैली इतनी सरस एवं सरल है कि सभी श्रेणी के श्रोता आनन्दमग्न हो जाते हैं। आपके निर्देशन में वृन्दावन में श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की स्थापना हुई, जिसके अन्तर्गत श्रीमद्भागवत धाम में श्रीभागवत एवं वेदादि की नि:शुल्क शिक्षा व्यवस्था की गयी है। भागवतकृपा निकुंज में एक भव्य सत्संग हाल का निर्माण किया गया है जिसमें श्रीमद्भागवत सप्ताह आदि धार्मिक आयोजन एवं अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं। एक आतिथेयम् निर्माणाधीन है जो शीघ्र ही अतिथियों के लिए आवासीय सुविधा हेतु उपलब्ध होगा।

'सर्वभूतहितेरता' की भावना से ओत प्रोत श्रीठाकुरजी अति विनम्र एवं मृदुभाषी हैं। आपका व्यक्तित्व भगवत्-भक्तों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित करता है। आपकी वाणी में दिव्य ओज है और मिठास ऐसी कि श्रीमद्भागवत कथा के श्रोता आत्मविभोर होकर अपना सर्वस्व अपने प्यारे श्रीकृष्ण को समर्पित करने को तत्पर हो उठते हैं।

श्रीठाकुरजी की शास्त्र सम्मत मान्यता है कि श्रीमद्भागवत श्रीकृष्ण-स्वरूप ही है। विद्वत्-समाज द्वारा 'भागवत भास्कर' उपाधि से सम्मानित श्रीठाकुरजी हिन्दू संस्कृति एवं वैदिक सनातन धर्म के व्यापक प्रचार हेतु मनीला, शिकागो, कनाडा, यूरोप, हांगकांग, अमेरिका तथा लंदन आदि में भी समय-समय पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का प्रसाद बाँट रहे हैं।

अमृत बिन्दु

● परम पूज्य श्रीकृष्ण चन्द्र शास्त्री (श्रीठाकुर जी) के प्रवचन से

१. गलती करना मानव की प्रकृति है किन्तु माफ करना दैवीय गुण है।

२. समस्त सांसारिक सुखों के सामने ईश्वर की कृपा प्राप्त करना अधिक आवश्यक है।

३. धर्म उनकी रक्षा करता है जो धर्म की रक्षा करते हैं।

४. धनी वह नहीं जिसके पास धन होता है बल्कि वह है जो उसे अर्जित करता है तथा उसका उपभोग करता है।

५. अपने कर्म पर हमारा हक होता है पर उसके परिणाम पर नहीं।

६. स्वयं अपनी गलती को समझना कठिन होता है परन्तु दूसरों की गलती हमें तुरन्त दीख जाती है।

७. जीवन का मूल्य दूसरों के लिए जीने में ही है।

८. अगर आप किसी की गलती पर क्रोध करते हो तो आप गलती करने वाले के समान ही स्थान प्राप्त करते हो।

९. प्रकृति हमें हर पल यह स्मरण कराती है कि इस संसार में कुछ भी जरूरी नहीं होता, इस कारण हर वस्तु को सरलता से लीजिये।

१०. धन हमें खुशी खरीदकर नहीं दे सकता है, पर आप जैसा चाहो वैसा दुःख अवश्य ही खरीदकर दे सकता है।

११. आप प्रेम की अपेक्षा मत रखिये, बल्कि दूसरों को प्रेम बाँटिये, दूसरे आपको समझें यह अपेक्षा मत रखिये, बल्कि आप दूसरों को समझिये।

१२. यह प्रकृति का नियम है कि सुख बाँटने से बढ़ता है और दुःख बाँटने से घटता है।

१३. स्वयं सेवा पाने का भाव न रखकर निःस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले की तुलना देवों से की जाती है।

१४. निर्दयी–न्याय की तुलना में दया का प्रभाव अधिक होता है।

१५. जीवन एक पर्व के समान होना चाहिये क्योंकि जब आप दुःखी होते हैं तो सर्वत्र मायूसी फैलाते हैं।

१६. सत्य ही प्रेम है और प्रेम ही सत्य है।

१७. माफी ही सच्ची खुशी की चाबी है।

१८. ईश्वर कोई सरकारी अफसर नहीं जिन्हें घूस देकर खरीदा जा सके।

१९. क्रोध की जड़ इच्छा है।

२०. हमारे अच्छे कर्मों को न ही आग मिटा सकती है और न ही हवा, न ही जन्म और न ही मरण।

२१. सर्वोत्तम छः डॉक्टर जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती– धूप, पानी, विश्राम, वायु, व्यायाम तथा भोजन।

२२. न्यायालय के न्यायाधीश हम पर दया दिखा सकते हैं परन्तु प्रकृति के नियम के आगे कुछ नहीं हो सकता।

२३. आप जहाँ भी जाओ वहाँ कैसा भी वातावरण क्यों न हो पर आप स्वयं सूर्य की किरण बन जाओ।

२४. इन्सान का मूल्य उसकी देने की क्षमता में है, न कि उसकी पाने की कामना में।

२५. हर क्रिया की उतनी ही उल्टी प्रक्रिया होती है, क्योंकि यही कर्म का नियम है।

२६. बीता हुआ कल इतिहास है, आने वाले कल का न किसी को आभास है, पर आज? आज तो वर्तमान है। ईश्वर का दिया हुआ तोहफा है और इसीलिए इन्सान को वर्तमान में ही खुश रहना चाहिये।

२७. ईश्वर का मतलब प्रेम है इसलिए प्रेम में कभी दुःख नहीं हो सकता।

२८. ईश्वर को हमसे केवल मन चाहिये।

२९. हमें डरने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ईश्वर हमारे पास है।

३०. संक्षिप्त में जीवन के बारे में यह कह सकते हैं कि जीवन चलता रहता है।

३१. सत्य ही धर्म है।

३२. ईश्वर को पाने का सबसे छोटा रास्ता केवल उसकी शरण में जाना है।

श्रीमद्भागवत संदेश

परिवार की ओर से

दीपावली की शतशः शुभकामनाएँ

विज्ञान विमर्श

● वैकुण्ठवासी पं. श्री रामानुज जी शास्त्री

• पूर्व क्रमागत

आधिभौतिक विज्ञान

तीसरा है आधिभौतिक विज्ञान। आधिभौतिक विज्ञान उसको कहते हैं जो हम सभी के सामने प्रत्यक्ष दीख रहा है। आधिभौतिक विज्ञान में बड़ी एकाग्रता से विचार करके अनुसंधान किया जाता है कि किस भौतिक पदार्थ का कितनी मात्रा में किस प्रक्रिया से किसका संमिश्रण होने से कैसा परिणाम होता है? इन समस्त छोटे–बड़े भौतिक पदार्थों के संमिश्रण से ही जिसका आविष्कार होता है, वही भौतिक विज्ञान कहलाता है। भौतिक विज्ञान से आविष्कृत जितने यन्त्र होते हैं वे सब सर्वथा जड़ होते हैं। उनमें तो भौतिक पदार्थ का ही प्रभाव रहता है। जहाँ वह प्रभाव समाप्त हुआ वहीं रुक जायेगा। जड़ वस्तु से आविष्कृत होने के कारण उनमें सर्वथा जड़ता ही रहती है। उसका संचालक चेतन उसको अपने अधीन तभी तक रख सकता है जब तक उसमें किसी प्रकार का विकार नहीं आता। जैसे कार है, चलते–चलते रुक जाती है। उसमें या तो पेट्रोल की कमी या किसी यन्त्र में विकार आ जाता है तब वह कार बेकार हो जाती है। फिर उसको सुधारना पड़ता है। इसी प्रकार से जीप, ट्रक, बस आदि को भी समझ लेना चाहिए।

रेल का इंजन है उसमें भी यदि किसी प्रकार का दोष आ जाता है तो वह भी संचालक के अधीन नहीं हो पाता। उसको भी बड़ी सावधानी से सुधार कर चलाना पड़ता है। इसी प्रकार जल का जहाज है उसमें किसी भी प्रकार से यन्त्र में अथवा उसके संचालन के पदार्थ में अल्पता अथवा अन्य कोई दोष आ जाता है तो उसकी गति भी रुक जाती है तो वह संचालक के अधीन नहीं रह पाता।

अब निराधार आकाश में उड़ने वाले हवाई जहाज की ओर देखिये तो वह इतना मोहक दिखाई पड़ता है कि उसमें बैठने के बाद न तो कहीं गिरने की सम्भावना दिखायी देती है और न उसमें कोई भय लगता है। उड़ने पर बड़ा ही आनन्द का अनुभव होता है, परन्तु उड़ते–उड़ते जहाँ कहीं उसमें ईंधन का अभाव हुआ अथवा किसी यंत्र में कोई दोष आया अथवा संचालक में ही कोई प्रमाद आ गया तो क्षणभर में सैकड़ों व्यक्तियों को विनष्ट कर डालता है। उसका चेतन ड्राइवर कितना भी उसको संभालने का प्रयास करता रहता है तब भी वह संचालक के अधीन नहीं हो पाता तथा गिर ही जाता है। इसका कारण यही है कि सारे यन्त्र भौतिक पदार्थ से बने हुए हैं। किसी भी भौतिक पदार्थ में चेतना का अंश भी नहीं रहता। उन्हीं जड़ भौतिक पदार्थों के संमिश्रण से उनका आविर्भाव तथा संचालन होता है। इसलिए वे संचालक के सर्वथा अधीन नहीं हो पाते।

इसी प्रकार और भी जितने यन्त्र हैं वे सबके सब भौतिक पदार्थ से निर्मित हैं और सारे भौतिक पदार्थ सर्वथा जड़ होते हैं। इसलिए जड़ पदार्थ दूसरों के हित–अहित को समझने में अथवा करने में समर्थ नहीं होते। जड़ पदार्थ से बने हुए सारे जड़ यन्त्र बनते बिगड़ते रहते हैं।

भौतिक पदार्थों से बने हुए जितने चमत्कारी आविष्कार हैं, वे आधिभौतिक विज्ञान के आविष्कार कहलाते हैं। अब इन तीनों प्रकार के विज्ञानों का प्रभाव देखिये। आध्यात्मिक विज्ञान तथा उसके आविष्कार की शक्ति सर्वथा चैतन्यघन परमात्मा के अधीन रहती है और परमात्मा सबके हितैषी हैं, भक्तवत्सल हैं, इसलिए सर्वथा भक्तों के अधीन रहते हैं। परमात्मा तो अपने ज्ञानानन्दमय स्वरूप में ही परिपूर्ण हैं इसलिए भक्तों की इच्छा ही उन परमात्मा की इच्छा है। वह परमात्मा सर्वसमर्थ हैं उनके द्वारा आविष्कृत चमत्कारकारिणी शक्ति तो उन्हीं में है। इसलिए उनके सम्बन्ध में कुछ कहना आवश्यक नहीं है।

आधिदैविक शक्ति से आधिदैविक जो भी चमत्कारी आविष्कार हैं वह भी चेतनामय है। इसलिए वे भी परम हितकारक हैं। उसमें भी घात होने का कोई कारण नहीं है। आधिदैविक विज्ञान से आविष्कृत जो नाना प्रकार के दिव्य भोग वैभव हैं वे भी बड़े अलौकिक चमत्कारी हैं। आधिदैविक विज्ञान से आविष्कृत दिव्य विमानों का वर्णन इतिहास में उपलब्ध होता है। जैसे कर्दम ऋषि का कामग विमान, कुबेर जी का पुष्पक विमान इत्यादि। अन्य भी स्वर्ग लोक के दिव्य विमानों का वर्णन आता है। ये सब आधिदैविक शक्ति से सम्पन्न होते हैं। इसलिए इनमें दिव्य भोग भी स्वतः प्राप्त होते हैं एवं आकाश में उड़ते हुए संचालक के अधीन होने के कारण उसके संकल्प मात्र से ही निराधार आकाश मण्डल में रुक जाते हैं। इनमें चेतना शक्ति रहती है। इसलिए कभी किसी के लिए घातक नहीं होते। इनमें संकोच–विकास भी होता रहता है। जहाँ जैसी आवश्यकता तथा इच्छा होती है वहीं संकुचित अथवा विकसित हो जाते हैं।

आधिदैविक विज्ञान से आविष्कृत अस्त्र–शस्त्र भी बड़े ही प्रभावशाली होते हैं जैसे ब्रह्मास्त्र, नारायणास्त्र, पाशुपतास्त्र आदि शस्त्र विश्व को विध्वंश कर देने में समर्थ होते हैं। तथापि इनका प्रयोग करना भी धर्म की दृष्टि से निषिद्ध है। आधिदैविक विकार से आविष्कृत अस्त्र–शस्त्र भी चेतनामय होते हैं। उनमें भी उचित अनुचित का विवेक होता है तथा वे निरपराध प्राणियों का घात करने पर नियन्त्रण लगाते हैं। इन आध्यात्मिक तथा आधिदैविक विज्ञानों का प्रमाण तथा आविष्कार धार्मिक युग में होता है।

धार्मिक युग के मानव–धर्म के नियन्त्रण में रहते हुए धर्मपूर्वक युद्ध करते हैं। निरपराध प्राणियों को नष्ट करना घोर अधर्म मानकर ऐसे किसी भी अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग नहीं करते हैं, जिससे निरपराध प्राणियों का घात हो। इसलिए महाभारत काल में ब्रह्मास्त्रादि को भी प्राप्त करके इनका प्रयोग नहीं किया गया। आधिदैविक विज्ञान से प्राप्त विमान अस्त्र–शस्त्र तथा भोग वैभव भी दिव्य होते हैं, भोक्ता तथा संचालक के सर्वथा अधीन होते हैं इसलिए उनसे कभी किसी का घात नहीं होता।

इसके विपरीत आधिभौतिक विज्ञान भौतिक पदार्थ से निर्मित होने के कारण पदार्थ के अधीन रहते हैं। संचालक के अधीन नहीं। संचालक के अधीन तभी तक रहते हैं जब तक उनमें रहने वाले सब यन्त्रों के संचालन की शक्ति पूर्ण रूप से ठीक–ठीक बनी रहती है। इसीलिए चलते समय टकराकर के अथवा बिगड़ करके मनुष्य

के घातक बन जाते हैं तथा घात कर बैठते हैं।

इसी कारण से धार्मिक युग के मनीषी महापुरुषों ने भौतिक विज्ञान को महत्व न देकर आध्यात्मिक एवं आधिदैविक विज्ञान को महत्त्व दिया। आध्यात्मिक एवं आधिदैविक विज्ञान से आविष्कृत चमत्कारी विमान के अस्त्र–शस्त्र यथा भोग वैभव परोपकारी होते हैं। अधिक से अधिक प्राणियों का हित करते हैं। इसलिए धार्मिक युग में आध्यात्मिक तथा आधिदैविक विज्ञान को आदर दिया तथा उसी का आश्रय लिया। वर्तमानकाल का मानव ने नास्तिक अधर्मी तथा अल्प शक्ति होने के कारण इन दोनों विज्ञानों के ऊपर न तो विश्वास किया और न उनकी ओर प्रवृत्त हुआ, इसलिए उनका आविष्कार तथा प्रभाव केवल श्रवण मात्र के लिए रह गया, प्रत्यक्ष नहीं हो पाया।

यह भी अपने–अपने काल का प्रभाव है। जैसे आस्तिक धार्मिक युग में आध्यात्मिक एवं आधिदैविक विज्ञान के प्राबल्य के कारण आधिभौतिक विज्ञान का आविष्कार नहीं था। इसी प्रकार से नास्तिक अधार्मिक वर्तमान आधिभौतिक–विज्ञानकाल में आध्यात्मिक एवं आधिदैविक विज्ञान लुप्त प्रायः है। केवल श्रवण का विषय रह गया है।

धार्मिक युग में मानव जीवन का बहुत बड़ा महत्त्व था। क्योंकि आस्तिक होने के कारण, आत्मा की नियन्ता सिद्ध होने के कारण, पुनर्जन्म का साक्षात्कार होने के कारण पारलौकिक जीवन के सुधार पर विशेष ध्यान देते थे।

मनुष्य का जन्म बहुत दुर्लभ है। यह बार–बार प्राप्त नहीं होता है। जो मनुष्य जीवन मिला है उसको सफल बनाने में सतत सावधान रहते थे। इसलिए धार्मिक युग का आस्तिक मानव समाज सत्यनिष्ठ, न्यायनिष्ठ, परोपकार परायण होता था। इसके विपरीत वर्तमानकाल के नास्तिक तथा ज्ञान–शून्य मानव समाज में अधर्मी, मिथ्यावादी, मिथ्याचारी, केवल इहलौकिक भोग में निरत रहने वाला आचारशून्य–विवेकविहीन मानव समाज अधर्म, असत्यवादी–अन्यायी तथा आचार भ्रष्ट होकर केवल व्यक्तिगत एवं कौटुम्बिक स्वार्थ में अन्धा बना हुआ है। नास्तिक होने के कारण पारलौकिक गति का ज्ञान कुण्ठित हो गया है। आज का नास्तिक मानव समाज पूर्ण रूप से अपने स्वरूप तथा कर्तव्य से भ्रष्ट होकर भटक रहा है। साम्यवादी युग का प्रभाव होने के कारण कोई किसी को अपने से महान नहीं मान रहा है और न उसका अनुकरण, अनुसरण होने की प्रवृत्ति हो रही है। इसका भी एक मात्र कारण यही है कि धर्म, सत्य, न्याय, सदाचार–परोपकार परायण सर्वजीव–हितैषी कोई महान् पुरुष भी नहीं दिख रहा है। ग्रामीण–उक्ति चरितार्थ हो रही है। "चोर–चोर मौसेरा भाई" का समाज बना हुआ है। यदि कहीं कोई जगद्गुरु के स्थान पर विराजमान महापुरुष हैं भी तो साम्यवाद के प्रभाव के कारण उनके प्रति न श्रद्धा है न उनका अनुसरण, अनुकरण है। इसलिए आज के मानव समाज का सुधरना–तथा सुधारना दोनों ही असम्भव दिखते हैं। इसका सुधार होने का एक ही कारण दिखता है–विश्व का विनाश होने के बाद ही इसका सुधार होगा। विनष्ट होने के बाद जो किसी प्रकार से बच जायेंगे वे स्वयं सुधर जायेंगे।

श्रीवृन्दावन .....महिमा

● पं. श्रीकिशन लाल जी शास्त्री, भागवत-मर्मज्ञ

• पूर्व क्रमागत

नित्यसहचरी–सखी–

पटभूसन अनुराग, सहज सिंगार जुगल उर।
रसनिधि, रूप अनूप, बैस, ऐस्वर्य गुननि गुर।।३६।।
लीला षट ऋतु दान, मान मंजुल मनमोदी।
भोजन सैन बिहार, करैं ललिता की गोदी।।३७।।

भावार्थ–अनुराग ही नित्यसखी श्रीहरिदासीजी के वस्त्राभूषण हैं और श्रीयुगल ही उनके हृदय के सहज शृंगार हैं।

ये प्रेम–रस की महासागर हैं। इनका रूप भी अनुपम है और वयस् भी। ये समस्त–रस–विलासरूपी वैभव की स्वामिनी तथा सम्पूर्ण गुणों की आचार्य हैं।

मन में विशुद्ध प्रेमानन्द–रस से भरी हुई हरिदासीजी नित्यविहार लीला के अनुकूल छहों ऋतुओं का दान प्रिया–प्रियतम को करती रहती हैं। इस उपहार को अत्यन्त स्पृहणीय मानकर श्रीयुगल का मन मोद से भर उठता है। वे भोजन–शयन आदि सब कुछ (जो नित्यविहार के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं) इन्हीं नित्य–सखी की गोद में करते हैं।।३६–३७।।

एक प्रान मन एक, देह द्वै प्रीतम–प्यारी।
तिनकौ नख–सिख ध्यान, कहौं छबि न्यारी–न्यारी।।३८।।

भावार्थ–यद्यपि प्रिया–प्रियतम के मन और प्राण तो एक ही हैं, किन्तु लीला के लिए ये पृथक्–पृथक् दो देह धारण किये हुए हैं, इसलिए अब हम अलग–अलग छवि से युक्त इनका नख–शिख ध्यान कह रहे हैं।।३८।।

नखसिख–ध्यान श्रीलड़ैती जू–

प्यारी–सिर सीमंत, सुभग सेंदुर गुरु मोती।
सीसफूल–चंद्रिका, उदित दुति अद्भुत जोती।।३९।।
चिकुर सचिक्कन चारु, स्याम आडंबर भारी।
पटियन मिडियन बीच, चुटीला अति छबिकारी।।४०।।
फूलन गूँथि सिंगार, कियौ सखियन तिन माँहीं।
पीछै बैनी फूल, कछू उपमा को नाहीं।।४१।।
कबरी कुसुमन कलित, नितंबन ऊपर लटकै।
फूलन झब्बा अंत, तहाँ ते मन नहिं भटकै।।४२।।

भावार्थ–श्रीकिशोरीजी के सिर की माँग सुन्दर सिंदूर तथा बड़े–बड़े मोतियों से भरी है। शीशफूल और चन्द्रिका से निकलने वाली कान्ति से सब ओर अद्भुत प्रकाश हो रहा है। चिकने

काले केशों का विशाल आटोप (चतुरस्र) पाटियों की गूँथनों के बीच शोभा को उभारने वाला लम्बा चुटीला लटका है। छोटी–छोटी वेणियों में फूल गूँथ–गूँथ कर सखियों ने इन्हें खूब सजाया है। सिर के पिछले भाग में वेणी के ऊपर लगे वेणीपुष्प (अलंकार) की छटा ऐसी निराली है कि उसकी उपमा के योग्य कोई दूसरी वस्तु है ही नहीं।

फूलों से अलंकृत यह चोटी श्रीकिशोरीजी के नितम्बों के ऊपर से लटक रही है। इस (चोटी) के सिरे पर जहाँ फूलों के स्तबक (झब्बे) लगे हैं, वहाँ से (प्रियतम का) मन हटाये नहीं हटता।।३६–४२।।

तनसुख सारी स्याम, कसीदा सुबरन सूतन।
कोर किनारी किरन, छबीली सीपी–पूतन।।४३।।
उदित ललित लिलाट, खौर सोहै चंदन की।
मृगमद बैंदी अर्धचंद्र, सुरकी बंदन की।।४४।।
तापर बैना बिसद, जगमगै जोति बिसाला।
फेंटनि मुक्तन लरैं, पनरियनि मनि–छबिजाला।।४५।।
भृकुटी बिकट बिसाल, लाल के मन कों करषै।
तापर पतरी अलक–झलक अद्भुत रस बरषै।।४६।।

भावार्थ–उन्होंने तनसुख[1] की नीली साड़ी पहन रखी है। उस पर सोने के तारों से सुन्दर कशीदा कढ़ा है। उसकी कान्तिमयी किनारी से छबीली किरणें झर रही हैं। साड़ी की मोतियों–जड़ी किनोर पर छबीली किरन टँकी हुई है।

लड़ैतीजी के उज्ज्वल ललित ललाट (भाल) पर चन्दन की खौर (तिलक) शोभायमान है। उस खौर के मध्य में कस्तूरी से अर्ध चन्द्र के आकार की बिंदी लगाई गई है और नीचे (नाक पर) गोरोचन का सुन्दर सुरक[2] रचा गया है।

इस खौर के ऊपर उज्ज्वल आभा से युक्त बेना (अलंकार) की अमन्द ज्योति जगमगा रही है। बेना के पेचों में (घुमावों) में मोतियों की लड़ियाँ लटकी हैं और पनरियों (परनालियों) में मणियों की शोभा का जाल पुरा है।

प्रियाजी की दीर्घ और वक्र भृकुटियाँ, जिन पर हिलती हुई पतली–पतली अलकावलियों की झलक निरन्तर अद्भुत रस–वृष्टि करती रहती है, लालजी के मन को सदा आकृष्ट किये रहती हैं।।४३–४६।।

दीरघ नैन रसाल, कनपटिन परसत कोये।
कज्जल मंजुल चपल, अनेरे मदन बिगोये।।४७।।
नासा बेसरि सुभग, निकट सोहै उरमौली।
बोलन डोलन माँहिं, तासु छबि परत न तौली।।४८।।

करनफूल तरकान, उपकरन सोहै तन्ना।
मध्य झलरिया पान, जराऊ मानिक पन्ना।।४६।।
तिनसौं मिलिकैं चली, बंदनी परसत माँगें।
चित्रित सुरंग कपोलन, पै अलकावलि हाँगें।।५०।।

भावार्थ–इनके रसीले नेत्र इतने विशाल हैं कि इनके कोये (अपांग) कनपटियों का स्पर्श कर रहे हैं। इन कज्जल–रंजित ललित, चपल और नुकीले नेत्रों ने काम को नाकाम कर रखा है।

इनकी नासिका के अग्रभाग में धारण की हुई सुन्दर बेसर के निकट ही उरमौली (अलंकार) सुशोभित है। बोलते समय इस (उरमौली) के हिलने से जो सौन्दर्य उभरता है, वह उपमा से परे है।

इन कानों के निचले भाग में कर्णफूल, उपरले में तरौना और मध्य में झलरिया पान (झिलमिली) सुशोभित हैं। ये सब कर्णाभूषण माणिक–मरकतों से जुड़े हैं। इन (अलंकारों) से मिलकर माँग का स्पर्श करती हुई बंदनी (अलंकार) जा रही है।

इनके गुलाबी कपोलों पर सुन्दर पत्रावलियाँ बनी हैं, और उनके ऊपर अलकावलियाँ झूल रही हैं।।४७–५०।।

अधर दसन अति अरुन बदन बीरन की पाबन।
मंद मधुर मुसक्यान, कहत कछु रस उपजाबन।।५१।।
जुग कपोल तिल गाड, चिबुक मसि बिंदु बिराजै।
कंठ पोत अति जोत, मुक्त–दुलरी छबि छाजै।।५२।।
चौकी उर बर रुचिर, तासु पर नाम बिहारी।
उन्नत उरज समान, पीन पिय रहत निहारी।।५३।।
अतलस अँगिया ललित, लाल सौरभ रस भीनी।
गुल गो स्यामल रंग, तासु की माँडनि दीनी।।५४।।

श्रीकिशोरीजी के अधरपल्लव मुख में पान का बीड़ा आरोगने से और श्रीलालजी द्वारा अधरामृत–पान करने से अतिशय अरुण हो रहे हैं।

इन पर जो मंद–मधुर मुस्कराहट खेल रही है, वह किसी अद्‌भुत रससृष्टि का आमन्त्रण दे रही है।

इनके दोनों कपोलों पर एक–एक तिल विराजमान है और चिबुक (ठोढी) के गड्‌ढे में भी एक श्याम–बिन्दु शोभा दे रहा है। इनके कण्ठ में अत्यन्त आभामय पोत (कंठी–अलंकार) और मोतियों की दुलरी की छवि छाई हुयी है।

इनके सुन्दर वक्षस्थल पर अत्यन्त आकर्षक चौकी (अलंकार) सुशोभित है, जिस पर 'बिहारी' नाम अंकित है। इनके उरोज इतने पुष्ट, उन्नत और सुडौल हैं कि प्रियतम उन्हें निहारते ही रहते हैं। ये (उरोज) लाल अतलस की सुवासित अँगिया से आच्छादित हैं, जिसे चमकीली और चिकनी श्याम रंग की गोट से सजाया गया है।।५१–५४।। • क्रमशः

भक्तों के प्रकार

● व्रजविभूति श्रीश्यामदासजी

• मनुष्य में भक्ति का अभाव होना ही आत्यन्तिक दुःख है, इस दुःख की आत्यन्तिकी निवृत्ति ही परम साध्य है। सर्वशास्त्र–समस्त उपर्युक्त वचन के अनुसार जो मनुष्य भक्ति–अभाव में अत्यन्त पीड़ा का अनुभव करते हैं, वही भक्ति की प्राप्ति के लिए प्रयास भी करते हैं।

• भक्ति स्वच्छन्द और स्वप्रकाश है। वह किसी दान–व्रत–तप आदि साधन के द्वारा प्राप्त नहीं होती। एकमात्र भक्ति से ही भक्ति उत्पन्न होती है। भगवत्कृपा से भक्तिप्राप्त भक्तों के हृदय में रहने वाली भक्ति ही भक्ति को आविर्भूत करती है। भगवत्–प्रेम तथा मानसिक भावों के तारतम्यानुसार भक्त तीन प्रकार के हैं? उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ।

• **उत्तम–भक्त** वे हैं जो समस्त स्थावर–जंगम में अपने उपास्य इष्टदेव को देखते हैं जैसे श्रीप्रह्लाद ने स्तम्भ में अपने उपास्य को देखा। वे अपने उपास्य इष्टदेव में ही समस्त स्थावर–जंगम को देखते हैं, जैसे श्रीयशोदाजी ने श्रीकृष्ण के उदर में समस्त जगत् को देखा–

महाभागवत देखे स्थावर जंगम।
ताहाँ ताहाँ हय ताँर श्रीकृष्ण–स्फुरण।।
स्थावर–जंगम देखे न देखे तार मूर्ति।
सर्वत्र हय निज इष्टदेवेर स्फूर्ति।।

अर्थात् उत्तम–भक्त सर्वत्र निजभगवद् भाव–दर्शन की योग्यता को प्राप्त होते हैं। ऐसे उत्तम–भक्त भगवत् लीला में प्रवेशाधिकार प्राप्त होते हैं। उनकी बहिर्दर्शन में साधारणोचित स्थावर–जंगमात्मक भूत बुद्धि ही अपसारित हो जाती है। अतः बहिर्मुख जीव के लिए उनके हृदय में अवस्थित भक्ति की कृपा को प्राप्त करना सम्भव ही नहीं होता।

• दूसरे हैं **मध्यम–भक्त**, उनका अपने उपास्य इष्टदेव में प्रेम होता है, उनमें आसक्ति होती है। जो व्यक्ति श्रीभगवान् के शरणागत होते हैं, उन भक्तों के साथ मध्यम–भक्त मित्रता रखते हैं। जो व्यक्ति भगवद्भक्ति के विषय में कुछ नहीं जानते, उनके प्रति मध्यम भक्त कृपा–भाव रखते हैं। वे उनको भक्ति–साधन में लगाने के लिए सदा इच्छुक रहते हैं। जो लोग भगवान् से द्वेष रखते हैं, नास्तिक हैं, मध्यम–भक्त उनकी उपेक्षा किया करते हैं, क्योंकि उनपर कृपा या दया की विफलता वे जानते हैं।

• मध्यम–भक्त अपने प्रति द्वेष रखने वालों को मूर्ख समझ कर उनसे दूर रहते हैं, किन्तु उनसे द्वेष न रखकर सदा उनके लिए भी शुभ कामना करते रहते हैं। परन्तु इन मध्यम–भक्तों में सर्वभूतों में भगवद्भाव के दर्शन की योग्यता का अभाव रहता है। ये उत्तम–भक्तों की भाँति सर्वत्र समदर्शी नहीं होते। इनका अन्तःकरण घनीभूत आनन्दमय प्रेम से सम्यक् स्निग्ध नहीं होता। उत्तम–भागवत श्रीव्यास–शुकमनि आदि में सर्वत्र समदर्शिता के कारण अज्ञानियों के प्रति भी कृपा का स्वतः उद्भव होता है। श्रीनारदादि में मध्यम–भक्तों के चारों लक्षण प्रेम, मैत्री, कृपा और अपेक्षा देखने में आती है।

• मध्यम–भक्तों में भक्तिहीन–व्यक्तियों के प्रति कृपा रहती है। इसलिए मध्यम–भक्तों के अन्तःकरण में रहने वाली भक्ति को ही भक्ति के उदित होने का कारण निरूपण किया गया है। मध्यम–भक्त या महत् पुरुष भगवत्–प्रेरणा के बिना भी किसी में भक्ति का संचार करने की सामर्थ्य रखते हैं; भक्त की वशीभूतता के कारण श्रीभगवान् ने उन भक्तों को स्वतन्त्ररूप से भक्ति संचार करने का अधिकार प्रदान कर रखा है।

• सब भक्तों की समस्त चेष्टाएँ श्रीभगवान् की शक्ति के द्वारा यथायोग्य व्यवहार में नियमित रहती हैं। सम्पूर्ण रूप से स्वाधीन न रहने पर भी वे श्रीभगवान् का अनुग्रह प्राप्त होने से विशेष बन्धन में नहीं रहते। अतः मध्यम–भक्तों की कृपा ही एक मात्र भक्ति के उदय होने का मुख्य कारण है।

• कहीं–कहीं दान–व्रत आदि निष्काम कर्मों को और योग–ज्ञान को भी भक्ति के उदित होने का कारण कह दिया जाता है, किन्तु ऐसा स्थूल–दृष्टि से कहा जाता है, जैसे स्वेच्छामय लीलाधारी श्रीभगवान् के अवतार का कारण स्थूल दृष्टि से असुर–संहार और धर्म–संस्थापन कह दिया जाता है।

• दान, व्रत, तप, अध्ययन तथा संयम आदि अनेक प्रकार के कल्याणकारी कर्मों से जो भक्ति उदित होती है, वह भक्ति ज्ञान की अंगरूपा सात्त्विक–भक्ति होती है, वह प्रेम की अंगरूपा निर्गुणा–भक्ति नहीं होती। ज्ञानांगभूता "कर्म–ज्ञानमिश्रा भक्ति" कहलाती है। दान–व्रतादि से उदित होने वाली भक्ति 'आरोप–सिद्धा' भक्ति कही गयी है।

• तीसरे, **कनिष्ठ–भक्त** वे हैं जो केवल श्रीभगवान् के विग्रह (मूर्ति) आदि में भगवत्–पूजा करते हैं। भगवद्भक्तों तथा अन्य जीवों के प्रति किसी भी प्रकार वे प्रीति पोषण नहीं करते। ध्यान रहे कि भगवत्–मूर्तिपूजा को प्रारब्ध–भक्ति कहा जाता है, अर्थात् वह प्रारम्भिक भक्ति हैं; जो धीरे–धीरे भविष्य में उत्तमा भक्ति में परिवर्तित हो जाती है–"अधुनैव प्रारब्धभक्तिः, शनैरुत्तमा भविष्यतीत्यर्थ" (श्रीधरस्वामी)।

• परतत्त्व, व्यूह, विभव, अन्तर्यामी तथा अर्चाविग्रह–ये पाँच प्रकाश हैं जिनकी उपासना से जीव भगवद् साम्मुख्य प्राप्त करता है। परतत्त्व परब्रह्म श्रीकृष्ण के व्यूह या अवतारों में वैभव तथा अन्तर्यामी प्रकाश रहता है। वे केवल अवतार काल में प्रदर्शित होते हैं एवं उपासनीय रहते हैं।

• परन्तु अर्चाविग्रह, एक ऐसा अवतार विशेष है, जिसमें अन्तर्यामित्व अन्तर्भुक्त रहता है। अन्तर्यामित्व पूर्वक वह अर्चाविग्रह सर्वकालिक उपासनीय रहता है। श्रीअर्चा–विग्रह या श्रीमूर्ति परतत्त्व का अभिन्नरूप है। श्रीविग्रह–पूजानिष्ठ भक्तों को प्राकृत–भक्त भी कहा गया है, अर्थात् प्रारम्भिक भक्ति स्तर में अवस्थिति के कारण उन्हें 'कनिष्ठ' कहा गया है। कनिष्ठ भक्तों की कृपा से किसी में भक्ति का उदय नहीं होता। मध्यम–भक्तों के हृदय में अवस्थित भक्तिविशेष की कृपा से ही अनादि बहिर्मुख जीव में भक्ति का उदय होता है। निष्कर्ष यह है कि 'भक्ति महारानी की कृपा से भक्ति का उदय होता है। वह परम स्वच्छन्द, स्वप्रकाश एवं अन्यनिरपेक्ष है।

धन्या ब्रज वसुन्धरा

● श्री सौरभ गौड़, अध्यक्ष-विश्व हिन्दू परिषद, वृन्दावन
मो. : 98371-64790

महावन गोकुल

महावन समस्त वनों से आयतन में बड़ा है इसलिये इसे बृहद्वन भी कहा गया है। इसको महावन या गोकुल भी कहते हैं। गोलोक से यह गोकुल अभिन्न है। गोपराज नन्दबाबा के पिता पर्जन्य गोप पहले नन्दगाँव में ही रहते थे। वहीं रहते समय उनके उपानन्द, अभिनन्द, श्रीनन्द, सुनन्द, और नन्दन–ये पाँच पुत्र तथा सनन्दा और नन्दिनी दो कन्याएँ पैदा हुईं। उन्होंने वहीं रहकर अपने सभी पुत्र और कन्याओं का विवाह कर दिया। मध्यम पुत्र श्रीनन्द को कोई सन्तान न होने से वे बड़े चिन्तित हुये। उन्होंने नन्द को सन्तान की प्राप्ति के लिए नारायण की उपासना की और उन्हें आकाशवाणी से यह ज्ञात हुआ कि श्रीनन्द को असुरों का दलन करने वाला महापराक्रमी सर्वगुणसम्पन्न एक पुत्र शीघ्र ही प्राप्त होगा। इसके कुछ ही दिनों बाद केशी आदि असुरों का उत्पात आरम्भ होने लगा। पर्जन्य गोप पूरे परिवार और सगे सम्बन्धियों के साथ इस बृहद्वन में उपस्थित हुए। इस बृहद् या महावन में निकट ही यमुना नदी बहती है। यह वन नाना प्रकार के वृक्षों, लता–वल्लरियों और पुष्पों से सुशोभित है, जहाँ गऊओं के चराने के लिए हरे–भरे चारागाह हैं। ऐसे इस स्थान को देखकर सभी गोप ब्रजवासी बड़े प्रसन्न हुए तथा यहीं पर बड़े सुखपूर्वक निवास करने लगे। यहीं पर नन्दभवन में यशोदा मैया ने कृष्ण कन्हैया तथा योगमाया ने यमज सन्तान के रूप में अर्द्धरात्रि को प्रसव किया। यहीं यशोदा के सूतिकागार में नाड़ीच्छेदन आदि जातकर्मरूप वैदिक संस्कार हुए। यहीं पूतना, तृणावर्त, शकटासुर नामक असुरों का बधकर कृष्ण ने उनका उद्धार किया। पास ही नन्द की गोशाला में कृष्ण और बलदेव का नामकरण हुआ। यहीं पास में ही घुटनों पर राम–कृष्ण चले, यहीं पर मैया यशोदा ने चञ्चल बालकृष्ण को ऊखल से बाँधा, कृष्ण ने यमलार्जुन का उद्धार किया। यहीं ढाई–तीन वर्ष की अवस्था तक की कृष्ण और बलराम की बालक्रीड़ाएँ हुईं। नीचे हम संक्षेप में इनका वर्णन कर रहे हैं।

मथुरा से लगभग छह मील पूर्व में महावन विराजमान है। ब्रजभक्तिविलास के अनुसार महावन में श्रीनन्दमन्दिर, यशोदा शयनस्थल, ओखलस्थल, शकटभञ्जन–स्थान, यमलार्जुन उद्धारस्थल, सप्तसामुद्रिक कूप, पास ही गोपीश्वर महादेव, योगमाया जन्मस्थल, बाल गोकुलेश्वर, रोहिणी मन्दिर, पूतना बधस्थल दर्शनीय हैं। भक्तिरत्नाकर ग्रन्थ के अनुसार यहाँ के दर्शनीय स्थल हैं– जन्मस्थान, जन्मसंस्कारस्थान, गोशाला, नामकरण स्थान, पूतना वधस्थान, अग्निसंस्कार स्थल, शकटभञ्जन स्थल, स्तन्यपान स्थल, घुटुअनों पर चलने का स्थान, तृणावर्तवध स्थल, ब्रह्माण्डघाट, यशोदाजी का आंगन, नवनीतचोरी स्थल, दामोदरलीला स्थल, यमलार्जुन–उद्धार स्थल, गोपीश्वर महादेव, सप्तसामुद्रिक कूप, श्रीसनातन गोस्वामी की भजनस्थली, मदनमोहनजी का स्थान, रमणरेती, गोपकूप, उपानन्द आदि गोपों के वासस्थान, श्रीकृष्ण के जातकर्म आदि का स्थान, गोप–बैठक, वृन्दावन गमनपथ, सकरौली आदि।

वर्तमान दर्शनीय स्थल

नन्दमहाराजजी का दन्तधावन टीला– यहाँ नन्द महाराजजी बैठकर दातुन के द्वारा अपने दाँतों को साफ करते थे।

नन्दबाबाकी हवेली तथा अन्यान्य गोप–गोपियों की हवेली– दन्त धावन टीला के नीचे और आसपास नन्द और उनके भाइयों की हवेलियाँ

तथा सगे–संबन्धी गोप, गोपियों की हवेलियाँ थीं। आज उनके भग्नावशेष दूर–दूर तक देखे जाते हैं।

नन्दभवन या कृष्ण का जन्मस्थान– नन्द हवेली के भीतर ही श्रीयशोदा मैया के कक्ष में भादों माह के रोहिणी नक्षत्रयुक्त अष्टमी तिथि को अर्द्धरात्रि के समय स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण और योगमाया ने यमज सन्तान के रूप में माँ यशोदाजी के गर्भ से जन्म लिया था। यहाँ योगमाया का दर्शन है। श्रीमद्भागवत में भी इसका स्पष्ट वर्णन मिलता है कि महाभाग्यवान् नन्दबाबा भी पुत्र के उत्पन्न होने से बड़े आनन्दित हुए। उन्होंने नाड़ीछेद–संस्कार, स्नान आदि के पश्चात् ब्राह्मणों को बुलाकर जातकर्म आदि संस्कारों को सम्पन्न कराया। विद्वान्–जन कहते हैं कि संसार में जन्म–मरण के भय से भीत कोई श्रुतियों का आश्रय लेते हैं तो कोई स्मृतियों का और कोई महाभारत का ही सेवन करते हैं तो करें, परन्तु मैं तो उन श्रीनन्दरायजी की वन्दना करता हूँ– जिनके आंगन में परब्रह्म बालक बनकर खेल रहा है।

पूतना उद्धार स्थल– माता का वेश बनाकर पूतना अपने स्तनों में कालकूट विष भरकर नन्दभवन में इस स्थल पर आयी। उसने सहज ही यशोदा–रोहिणी के सामने ही पलने पर सोये हुए शिशु कृष्ण को अपनी गोद में उठा लिया और स्तन पान कराने लगी। कृष्ण ने कालकूट विष के साथ ही साथ उसके प्राणों को भी चूसकर राक्षसी शरीर से उसे मुक्तकर गोलोक में धातृ के समान गति प्रदान की।

पूतना पूर्व जन्म में महाराज बलि की कन्या रत्नमाला थी। भगवान् वामनदेव को अपने पिता के राजभवन में देखकर वैसे ही सुन्दर पुत्र की कामना की थी। किन्तु जब वामनदेव ने बलि महाराज का सर्वस्व हरणकर उन्हें नागपाश में बाँध दिया तो वह रोने लगी। उस समय वह यह सोचने लगी कि ऐसे क्रूर बेटे को मैं विषमिश्रित स्तन–पान कराकर मार डालूँगी। वामनदेव ने उसकी अभिलाषाओं को जानकर 'एवम् अस्तु' ऐसा ही हो–वरदान दिया था। इसीलिए श्रीकृष्ण ने उसी रूप में उसका वधकर उसको धात्रोचित गति प्रदान की।

शकटभञ्जन स्थान– एक समय बालकृष्ण किसी छकड़े के नीचे पालने में सो रहे थे। यशोदा मैया उनके जन्मनक्षत्र उत्सव के लिए व्यस्त थीं। उसी समय कंस द्वारा प्रेरित एक असुर उस छकड़े में प्रविष्ट हो गया और उस छकड़े को इस प्रकार से दबाने लगा जिससे कृष्ण उस छकड़े के नीचे दबकर मर जाएँ। किन्तु चंचल बालकृष्ण ने किलकारी मारते हुए अपने एक पैर की ठोकर से सहज रूप में ही उसका वध किया। छकड़ा उलट गया और उसके ऊपर में रखे हुए दूध, दही, मक्खन आदि के बर्तन चकनाचूर हो गये। बच्चे का रोदन सुनकर यशोदा मैया दौड़ी हुई वहाँ पहुँचीं और आश्चर्य–चकित हो गईं। बच्चे को सकुशल देखकर ब्राह्मणों को बुलाकर बहुत सी गऊओं का दान किया। वैदिक रक्षा के मंत्रों का उच्चारणपूर्वक ब्राह्मणों ने काली गाय के मूत्र और गोबर से कृष्ण का अभिषेक किया। यह स्थान इस लीला को सँजोये हुए आज भी वर्तमान है।

शकटासुर पूर्व जन्म में हिरण्याक्ष दैत्य का पुत्र उत्कच नामक दैत्य था। उसने एक बार लोमशऋषि के आश्रम के हरे–भरे वृक्षों और लताओं को कुचलकर नष्ट कर दिया था। ऋषि ने क्रोध से भरकर श्राप दिया– 'दुष्ट! तुम देह–रहित हो जाओ।' यह सुनकर वह ऋषि के चरणों में गिरकर क्षमा माँगने लगा। ऋषि ने कहा– वैवस्वत मन्वन्तर में कृष्ण के चरणस्पर्श से तू मुक्त हो जायेगा।' उसी असुर ने छकड़े में आविष्ट होकर कृष्ण को पीस डालना चाहा, किन्तु भगवान् कृष्ण के श्रीचरणकमलों के स्पर्श से मुक्त हो गया। श्रीमद्भागवत में इसका वर्णन है।

तृणावर्त वधस्थल– एक समय कंस ने मारने के लिए गोकुल में तृणावर्त नामक दैत्य को भेजा। वह कंस की प्रेरणा से बवण्डर का रूप धारण कर गोकुल में आया और यशोदा के पास ही बैठे हुए कृष्ण को उड़ाकर आकाश में ले गया। बालकृष्ण ने स्वाभाविक रूप में उसका गला पकड़ लिया, जिससे उसका गला रुद्ध हो गया, आँखें बाहर निकल आईं और वह पृथ्वी पर गिरकर मर गया।

दधिमन्थन स्थल– यहाँ यशोदाजी दधि–मन्थन करती थीं। एक समय बालकृष्ण निशा के अंतिम भाग में पलंग पर सो रहे थे। यशोदा मैया ने पहले दिन शाम को दीपावली के उपलक्ष्य में दास, दासियों को उनके घरों में भेज दिया था। सवेरे स्वयं कृष्ण को मीठा मक्खन खिलाने के लिए दधिमन्थन कर रही थीं तथा ऊँचे स्वर एवं ताल–लय से कृष्ण की लीलाओं का आविष्ट होकर गायन भी कर रही थीं। उधर भूख लगने पर कृष्ण मैया को खोजने लगे। पलंग से उतरकर बड़े कष्ट से ढुलते–ढुलते रोदन करते हुए किसी प्रकार माँ के पास पहुँचे। यशोदाजी बड़े प्यार से पुत्र को गोदी में बिठाकर स्तनपान कराने लगीं। इसी बीच पास ही आग के ऊपर रखा हुआ दूध उफनने लगा। भैया ने अतृप्त कृष्ण को बलपूर्वक अपनी गोदी से नीचे बैठा दिया और दूध की रक्षा के लिए चली गईं। अतृप्त बालकृष्ण के अधर क्रोधसे फड़कने लगे और उन्होंने लोढ़े से मटके में छेद कर दिया। तरल दधि मटके से चारों ओर बह गया। कृष्ण उसी में चलकर घर के अन्दर उलटे ओखल पर चढ़कर छींके से मक्खन निकालकर कुछ स्वयं खाने लगे और कुछ बंदरों तथा कौवों को भी खिलाने लगे। यशोदाजी लौटकर बच्चे की करतूत देखकर हँसने लगीं और उन्होंने छिपकर घर के अन्दर कृष्ण को पकड़ना चाहा। मैया को देखकर कृष्ण ओखल से कूदकर भागे, किन्तु यशोदाजी ने पीछे से उनकी अपेक्षा अधिक वेग से दौड़कर उन्हें पकड़ लिया, दण्ड देने के लिए ओखल से बाँध दिया। फिर गृहकार्य में लग गयीं। इधर कृष्ण ने सखाओं के साथ ओखल को खींचते हुए पूर्व जन्म के श्रापग्रस्त कुबेर पुत्रों को स्पर्श कर उनका उद्धार कर दिया। इसी समय बालकृष्ण का नाम दामोदर पड़ा। यह कथा श्रीमद्भागवत में विस्तृत रूप से वर्णित है। यहीं पर नन्दभवन में यशोदा जी ने कृष्ण को ओखल से बाँधा था। नन्दभवन से बाहर पास ही नलकूबर और मणिग्रीव के उद्धार का स्थान है। आजकल जहाँ चौरासी खम्बा हैं, वहाँ कृष्ण का नाड़ीछेदन हुआ था। उसी के पास में नन्दकूप है।

नन्दबाबा की गोशाला– गर्गाचार्यजी ने इस निर्जन गोशालामें कृष्ण और बलदेव का नामकरण किया था। नामकरण के समय श्रीबलराम और कृष्ण के अद्भुत पराक्रम, दैत्यदलन एवं भागवतोचित लीलाओं के संबन्ध में भविष्यवाणी भी की थी। कंस के अत्याचार के भय से नन्द महाराज ने बिना किसी उत्सव के नामकरण संस्कार कराया था।

मल्ल तीर्थ– यहाँ नंगे बाल कृष्ण और बलराम परस्पर मल्लयुद्ध करते थे। गोपियाँ लड्डू का लोभ दिखलाकर उनको मल्लयुद्ध की प्रेरणा देतीं तथा युद्ध के लिए उकसातीं। ये दोनों बालक एक दूसरे को पराजित करने की लालसा से मल्लयुद्ध करते थे। यहाँ पर वर्तमान समय में गोपीश्वर महादेव विराजमान हैं।

नन्दकूप– महाराज नन्दजी इस कुएँ का जल व्यवहार करते थे। इसका नामान्तर सप्तसामुद्रिक कूप भी है। ऐसा कहा जाता है कि देवताओं ने भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा के लिए इसे प्रकट किया था। इसका पानी शीतकाल में ऊष्ण तथा ऊष्णकाल में शीतल रहता था। इसमें स्नान करने से समस्त पापों से मुक्ति मिल जाती है।

नव ग्रह पूजन

● संकलन : पं. श्री बिष्णु पाठक, कोलकाता

किसी भी शुभ दिन व शुभ समय में नव–ग्रह पूजा करते हुये सभी ग्रहों से विनती करते हुये इस प्रार्थना का उच्चारण किया जाता है।

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमि सुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः
सर्वे ग्रहाः शांति करा भवन्तु।।

जिससे हमारा अभिप्राय है – हे ब्रह्माजी, विष्णु जी, महेश जी, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु देव कृपा करके हमें शांति दें और हमारा कल्याण करें।

नव–ग्रह की पूजा के लिए किसी शुभ मुहूर्त में अपने इष्ट देव को याद करके सुबह स्नान करके किसी पुरोहित को घर पर आमंत्रित करके स्वयं पूर्व दिशा की ओर व पुरोहित को उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठने के लिए आसन प्रदान करना चाहिये। पूजा स्थल व स्वयं को गंगा जल छिड़क कर पवित्र कर लेना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो पूजा में पति, पत्नी को साथ बैठना चाहिये। दाहिने हाथ से तीन बार जल का आचमन करते हुये निम्न प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये। ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः। जल का आचमन करने के पश्चात् ॐ हृषिकेशाय नमः कहते हुये हाथ को शुद्ध करना चाहिये। इसके बाद पति–पत्नी को शुद्ध घी का दीपक प्रज्ज्वलित करना चाहिये। इसके बाद इष्ट देव को याद करते हुये भगवान् से प्रार्थना करें कि हे ज्योति स्वरूप भगवान् मेरे मन में सब के लिए अच्छे विचार उत्पन्न हों। हे सूर्य देव, हे वरुण देव, हे इन्द्र देव, हे बृहस्पति देव एवम् भगवान् विष्णु जी आप सब पर और हमारे परिवार पर सदा अपनी कृपा बनाये रखें व हमारा कल्याण करें। इसके बाद भगवान् गणेश का आवाहन करके शास्त्रों में किये गये वर्णन के अनुसार नव–ग्रह पूजन किया जाता है।

सूर्य ग्रह पूजन

सूर्य को ग्रहों का राजा माना जाता है, पृथ्वी पर ऊर्जा देने वाला प्रमुख ग्रह सूर्य ही है। सूर्य देव की पूजा रविवार को की जानी चाहिये। सूर्य देव का आवाहन करते हैं और सूर्य देव की स्थापना के बाद सूर्य के मन्त्रों व बीज मंत्र का उच्चारण करते हैं। सूर्य गायत्री मंत्र, श्री आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। इसके पश्चात् अपनी श्रद्धा व शक्ति के अनुसार गेहूँ, गुड़, तांबा, माणिक और लाल वस्त्रों का दान करना चाहिये। सूर्य पूजा के साथ ही साथ भगवान् विष्णु की पूजा का भी विधान है। इस दिन व्रत भी रखा जा सकता है। सूर्य ग्रह पूजन से सरकारी विभाग व पिता से लाभ की प्राप्ति होती है।

चंद्र ग्रह पूजन

चंद्रमा हमारे मन का कारक है। इसका हमारे मन और मस्तिष्क पर प्रभाव रहता है। चंद्र देव का पूजन व व्रत सोमवार को करना चाहिये इस दिन सफेद पुष्पों को हाथ में लेकर प्रार्थना करनी चाहिये कि क्षीर सागर से उत्पन्न श्री चंद्र देव रोहिणी के साथ पधार कर अर्घ्य ग्रहण करें और मुझे सुख समृद्धि देकर मेरा कल्याण करें इसके बाद चंद्रमा के मंत्रों, बीज मंत्र व सोम गायत्री और चंद्र कवच स्तोत्र का पाठ करना

चाहिये। इसके पश्चात् अपनी श्रद्धा व शक्ति के अनुसार चाँदी, मोती, कपूर, घी, चावल और सफेद वस्त्रों का दान करना चाहिये। चन्द्र ग्रह पूजन से स्वास्थ्य सौन्दर्य व मानसिक शांति और माता से लाभ की प्राप्ति होती है।

मंगल ग्रह पूजन

मंगल देव की पूजा व व्रत मंगलवार को किया जाता है। मंगल देव को भूमि पुत्र भी कहा जाता है। हनुमान जी की पूजा से भी मंगल का अशुभ प्रभाव समाप्त हो जाता है। मंगलवार के दिन लाल फूलों को लेकर मंगल देव की प्रार्थना करें और कहें कि हे मंगल देव आप हमारे घर पधारें और हमें सुख समृद्धि देकर हमारा कल्याण करें। इसके पश्चात् मंगल के मंत्र बीज मंत्र, भौम गायत्री व मंगल कवच का पाठ करें। इसके पश्चात् मूंगा, तांबा, मसूर की दाल व लाल वस्त्र का दान करें। मंगल ग्रह के पूजन से हमारे गृहस्थ जीवन में सुख शांति व शरीर में शक्ति की वृद्धि होती है।

बुध ग्रह पूजन

बुध ग्रह की पूजा व व्रत बुधवार को किया जाता है। बुध देवता हमारे व्यक्तित्व में विद्या, वाणी और हास्य–परिहास की कल्पना व क्षमता को प्रवाहित करते हैं। बुध देवता के पूजन के लिये हरे रंग के फूलों को हाथ में लेकर प्रार्थना करनी चाहिये, कि हे बुध देवता हमारे घर पधारें और हमें बुद्धि, विद्या, वाणी द्वारा सुख समृद्धि देकर हमारा कल्याण करें। बुध के मंत्र बुध गायत्री व बुध कवच का पाठ करें। इसके पश्चात् अपनी इच्छा व इच्छा शक्ति के अनुसार पन्ना, कांस्य, स्वर्ण और हरे रंग का वस्त्र दान करना चाहिये। बुध ग्रह के पूजन से हमारे ज्ञान, शिक्षा में उन्नति और व्यापार में लाभ प्राप्त होता है।

बृहस्पति ग्रह पूजन

बृहस्पति ग्रह की पूजा व व्रत गुरुवार के दिन करना चाहिये। बृहस्पति ग्रह को देवताओं का गुरु, न्याय शास्त्रों और समस्त वेदों व शास्त्रों का ज्ञाता माना जाता है। बृहस्पति देव की पूजा के लिये पीले फूलों को हाथ में लेकर प्रार्थना करें कि हे बृहस्पतिदेव आप हमारे घर पधारकर हमें धर्म का ज्ञान देकर, हमें सुख और समृद्धि प्रदान कर हमारा कल्याण करें। बृहस्पति के मंत्र बीज मंत्र, बृहस्पति गायत्री व बृहस्पति स्तोत्र का पाठ करें। इसके पश्चात् अपनी इच्छा व शक्ति के अनुसार पुखराज, स्वर्ण, चने की दाल और पीले वस्त्रों का दान करें। जिन कन्याओं के विवाह में देरी हो रही हो या किसी प्रकार की बाधा आ रही हो तो उन्हें बृहस्पति पूजा अवश्य करनी चाहिये। सुखी व सफल विवाह और गृहस्थ जीवन के लिये बृहस्पति देव की पूजा अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होती है।

शुक्र ग्रह पूजन

शुक्र ग्रह की पूजा व व्रत शुक्रवार के दिन करना चाहिये। शुक्र ग्रह का सम्बन्ध राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य से है। शुक्र देव की पूजा के लिए सफेद फूल हाथ में लेकर प्रार्थना करें कि हे शुक्र देव आप सब शास्त्रों के ज्ञाता व सर्व सुखों के प्रतीक हैं। आप हमारे घर पधारकर हमें सुख–समृद्धि देकर हमारा कल्याण करें और हमें कष्टों से मुक्ति प्रदान करें। शुक्र देव के मंत्र, बीज मंत्र, शुक्र गायत्री, शुक्र स्तोत्र व शुक्र कवच का पाठ करें। उसके पश्चात् अपनी इच्छा व

शक्ति के अनुसार हीरा, चावल, घी, गाय और सफेद वस्त्रों का दान करें। इस दिन सफेद वस्त्र पहनने चाहिये दूध चावल चीनी और घी से बने प्रसाद को बाँटना चाहिये व स्वयं भी सेवन करना चाहिये। शुक्र ग्रह के पूजन से जीवन में भूमि–वाहन एवं एश्वर्य के साधनों की प्राप्ति होती है, गृहस्थ और वैवाहिक जीवन के सुखों में वृद्धि होती है।

शनि ग्रह पूजन

शनि ग्रह पूजा व व्रत शनिवार को किया जाता है। शनिदेव सूर्य देव के पुत्र हैं। शनिदेव का रंग काला है और वह बड़ी–बड़ी आँखों और विशाल शरीर वाले हैं। शनि की साढ़े–साती हर व्यक्ति के जीवन में अपना प्रभाव दिखाती है। शनि देव की पूजा के लिये काले रंग के फूलों को हाथ में लेकर प्रार्थना करें कि हे शनि देव हमारे घर पधारकर हमें जीवन की सब कठिनाइयों और कष्टों से मुक्ति दें। शनि के मंत्र, बीज मंत्र, शनि गायत्री और शनि कवच आदि का पाठ करें उसके पश्चात् अपनी इच्छा व शक्ति के अनुसार सरसों का तेल, काला तिल, काला वस्त्र, काली उड़द, लोहा व काले कपड़े का दान दें। शनि देव को काली उड़द की दाल की खिचड़ी का भोग लगाया जाना चाहिये और उसका प्रसाद बाँटा जाना चाहिये। शनि ग्रह के पूजन से धन संपदा प्राप्त होती है व रोगों से मुक्ति मिलती है।

राहू देव पूजन

समुद्र मंथन से पूर्व राहू केतू एक ही शरीरधारी दानव थां। समुद्र मंथन के समय जब राहू ने देवताओं के साथ अमृत पान कर लिया था तो वह अमर हो गया था और शरीर कट जाने के बाद भी मरा नहीं था तब से सिर के भाग को राहू व धड़ के भाग को केतू के नाम से जाना जाता है और तभी से राहू और केतु को भी पूजा का पात्र मान लिया गया है। राहू ग्रह की पूजा शनिवार के दिन करने से शुभ फल मिलते हैं। राहू देव की पूजा के लिये नीले फूल हाथ में लेकर राहू देव को स्मरण कर प्रार्थना की जाती है कि हे महाबली राहू आप हमारे घर पधार कर हमारे दुखों को समाप्त कर हमारा कल्याण करें। राहू के मंत्र, बीच मंत्र, राहू स्तोत्र व राहू कवच का पाठ करें इसके पश्चात् अपनी इच्छा और शक्ति के अनुसार सोना, गोमेद और काले कपड़े का दान करें। राहू देव की पूजा के फलस्वरूप हमारे शत्रुओं का नाश होता है, राजनीति में सफलता मिलती है और राजनीतिज्ञों के सम्बन्ध से लाभ की प्राप्ति होती है।

केतु देव पूजन

केतु ग्रह की पूजा मंगलवार को की जाती है। राहू और केतु को छाया–ग्रह माना गया है। राहु शनि के सामान ओर केतु मंगल के समान फल देता है। केतु देव की पूजा के लिये हाथ में लाल फूल लेकर प्रार्थना करें कि हे मस्तक विहीन रौद्र रूप धारी केतु देवता हमारे घर पधारकर हमारे कष्टों का अंत करें और हमें शांत एवं सुखी जीवन प्रदान करें। केतु के मंत्र, बीज मंत्र, केतु स्तोत्र व केतु कवच का पाठ करें। उसके पश्चात् अपनी इच्छा व शक्ति के अनुसार स्वर्ण, कंबल, कस्तूरी, तिल व तेल का दान करें। केतु देव के पूजन से हमें धन–हानि व रोगों से मुक्ति मिलती है, कोर्ट कचहरी में सफलता प्राप्त होती है और परिवार में शांति आती है।

जैसी दृष्टि वैसी वृष्टि

● श्री सुदर्शन सिंह 'चक्र'

आपने यह लोकोक्ति सुनी होगी– 'अपना काना–कुरूप लड़का भी माँ को सुन्दर लगता है।'

एक विद्वान् ने अपने प्रवचनों में कहा– 'चन्द्रमा सबको अच्छा लगता है। सबको सुन्दर और सुखद लगता है किन्तु कोई चन्द्रमा से प्रेम नहीं करता, क्योंकि कोई चन्द्रमा को अपना अनुभव नहीं कर पाता।'

इसका अर्थ हुआ कि प्रेम के लिए अपनत्व होना आवश्यक है। प्रेम के लिए सौन्दर्य, सद्गुण होना उतना आवश्यक नहीं है। प्रतिवर्ष ही प्रायः विश्व–सुन्दरी का चुनाव होता है। आप भले उनमें किसी को देखते न हों, चित्र देखने को मिल जाते हैं। वासनात्मक उत्तेजना की बात छोड़ दी जाय तो क्या कभी इनमें कोई आपको अपनी पुत्री या बहन के समान प्रिय लगी? यही बात गुणों के सम्बन्धों में भी है। प्रेम की परिभाषा करते हुए देवर्षि नारद ने अपने भक्ति–दर्शन में कहा–

'गुणरहितं कामनारहितं वर्धमानम्।'

सौन्दर्य और गुण आवश्यक भले न हों, ये प्रेम की अभिवृद्धि में सहायक होते हैं। ठीक बात, किन्तु कब? जब उससे अपनत्व हो। अपने शत्रु में या शत्रु के सहायक में सौन्दर्य या गुण हों तो प्रेम बढ़ावेंगे या वितृष्णा असूया उत्पन्न करेंगे?

यह सब न भी कहा जाय तो कुछ हानि नहीं किन्तु परम सौन्दर्य के राशि, निखिल सद्गुण–गणैकधाम कन्हाई से अधिक सुन्दर, अधिक गुणवान तो त्रिभुवन में कभी कोई न हुआ, न होना सम्भव है। इस सौन्दर्य सौकुमार्य महासिन्धु के सीकर का प्रसाद ही सृष्टि में सौन्दर्य बनकर फैला है। इस गुणगणैक धाम के गुणों की छाया मात्र से त्रिलोकी में अनादिकाल से प्राणियों को सद्गुण मिलते रहे हैं। इतने पर भी कन्हाई से प्रेम नहीं है या अल्प है तो इसका कारण होना चाहिए। कारण केवल यह कि इस नन्द–तनय से अपनत्व नहीं है या शिथिल है, अल्प है। अपनत्व सहज भी होता है और स्थापित भी किया जा सकता है। इसमें सहज अपनत्व सुदृढ़ होता है। कदाचित् ही कभी किसी में सहज अपनत्व के प्रति शैथिल्य दीखता है और जहाँ ऐसा है, वे हीन प्रकृति लोग हैं। माता–पुत्र, पिता–पुत्र, भाई–भाई, बहन–भाई आदि का अपनत्व सहज है, नैसर्गिक है। इसमें स्वार्थ या कोई दुर्गुण ही शिथिलता लाता है।

स्थापित अपनत्व सुदृढ़ नहीं होगा, ऐसी कोई बात नहीं है। यदि दोनों सत्पुरुष हैं तो स्थापित सम्बन्ध भी सुदृढ़ अपनत्व उत्पन्न करने में पूरा समर्थ है। पाश्चात्य सभ्यता का रंग भारतीयों पर चढ़ने लगा है और गाढ़ा ही होता जा रहा है, यह हमारे समाज का दुर्भाग्य है अन्यथा भारत में केवल सगाई होने के पश्चात् भी पति का शरीर न रहने पर सती हो जाने वाली भुवनपावनी कन्याएँ कम नहीं हुई हैं। इस अपने देश में विवाह सम्बन्ध केवल इसी जीवन तक नहीं माना जाता था। यह सम्बन्ध लोकान्तर जन्मान्तर में भी बना रहे, यह आकांक्षा की जाती थी, अब भी की जाती है और इसके बने रहने का विश्वास किया जाता है।

अनेक नारियों ने विपत्ति में किसी को राखी भेज दी और जिसे भेजी, उसने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया उस बहन की रक्षा के लिए। दत्तक पुत्र बनाने का तो शास्त्रीय विधान ही है। इस प्रकार धर्म भाई, धर्म बहन, मित्र, पुत्र या पुत्री बनाने की, अपनत्व स्थापित करने की परम्परा समाज में खूब प्रचलित है। यद्यपि ऐसे सम्बन्धों में आजकल बहुत दोष आने लगे हैं किन्तु यह दोष कुपुरुषों में आते हैं। सत्पुरुष तो एक बार जिसे पुत्री कह देते हैं, उसके साथ पुत्री का व्यवहार जीवन भर निभाते हैं। **कन्हाई को सम्बन्ध निभाना बहुत अच्छा आता है।** इससे आप आशा नहीं कर सकते कि यह अपने साथ स्थापित सम्बन्ध को अस्वीकार करेगा या उसके अनुसार व्यवहार में शिथिलता लायेगा। केवल आपकी ओर से शिथिलता नहीं

आनी चाहिए। आपके भीतर सम्बन्ध के प्रति उपेक्षा या उदासीनता नहीं होनी चाहिए।

कृत्रिम सम्बन्ध, सम्बन्ध नहीं होता। अनेक लोग कहते हैं– 'मैं तो आपका बालक हूँ।' ऐसा केवल मुख से कहना कोई भी शिष्टाचार ही मानता है। तब कन्हाई ही कैसे उसे स्वीकार कर लेगा?

'कन्हाई से क्या सम्बन्ध बनाया जाय?'

व्यर्थ प्रश्न है। ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं, जो इससे न बनाया जा सके और जिसे यह स्वीकार न करे। सम्बन्ध सच्चा बने आपके मन में, केवल यह आवश्यक है। सम्बन्ध सच्चा बनने के लिए आवश्यक है कि आपके मन में, आपके जीवन में उस सम्बन्ध की माँग हो। सुन–सुनाकर यह जानकर कि अमुक सम्बन्ध सर्वश्रेष्ठ है, सम्बन्ध बनाने से बनता नहीं। वह कृत्रिम होकर रह जाता है। एक विद्वान् सत्पुरुष ने सखी–भाव अपनाया। मधुर–भाव सर्वश्रेष्ठ है, यह सुनकर एक बहुत बड़ा समुदाय इसे अपना लेता है। मैं उनसे मिला तो उन्होंने अपने शिशुपुत्र का परिचय दिया– 'यह आपका बालक है।' आप तो श्याम सुन्दर के प्रति सखी भाव रखते हैं? मैंने पूछा। जी हाँ, यह उन रसिकशेखर का ही अनुग्रह है। उन्होंने कहा।

मेरी एक जिज्ञासा है। मैंने स्पष्ट पूछा– एक ही मन में अपने प्रति स्त्रीभाव और पुरुषभाव एक साथ कैसे रह सकते हैं? यदि नहीं रह सकते तो जिसमें सखी भाव है, वह अपनी पत्नी से भी पुत्रोत्पादन कैसे कर सकता है? वे रुष्ट हुए। उन्होंने अनेक लोकपूजित महापुरुषों के नाम गिनाने प्रारंभ कर दिये। मैं हाथ जोड़कर क्षमा माँगकर चला आया किन्तु मेरा समाधान नहीं हुआ।

एक लड़की के कोई भाई नहीं था। राखी पूर्णिमा को उसने अपनी माता के कहने पर गोपाल को राखी बाँध दी और गोपाल उसका भाई बन गया, क्योंकि बहन को सचमुच भाई की आवश्यकता अनुभव हो रही थी। उसके एक भी दूसरा भाई होता तो कहा नहीं जा सकता कि कन्हाई में उसका भ्रातृत्व सुदृढ़ होता या नहीं।

एक माता का इकतौता पुत्र मर गया। उसके दुःख की सीमा न रही। किसी संत ने कह दिया– यह कृष्ण तेरा पुत्र है। उसने संत की बात पकड़ ली। उसे तो पुत्र चाहिए था। उसने कृष्ण को पुत्र बनाया। **कृष्ण में दम है कि उसे मैया नहीं मानेगा?** इस प्रकार अनेक स्त्री–पुरुष जो सन्तानहीन थे, कन्हाई के मैया बाबा बन गये। श्याम को किसी का पुत्र बनने में संकोच कहाँ? अनेक विधवाओं ने श्याम को पति बना लिया। अनेक अविवाहित कुमारियों ने कन्हाई को पति स्वीकार किया। कृष्ण को 'ना' करना नहीं आता। सम्बन्ध जोड़ने वाला सच्चा है तो सम्बन्ध सुदृढ़। सम्बन्ध सुदृढ़ तो प्रेम की प्राप्ति सुनिश्चित।

'मैं ब्रजराजकुमार को जीजाजी बनाऊँगा।' पुरुष भी मिले ऐसे और कन्याएँ भी मिलीं। श्रीराधा को कोई बहन बनाना चाहेगा तो वह भी कहाँ अस्वीकार करना चाहती हैं। 'मैं इसे देवर बनाऊँगी।' एक ने कहा– इसे और कीर्तिकुमारी को भी मेरा रौब मानना पड़ेगा।' किस के मुख में हाथ भर की जीभ है जो कह दे यह सम्बन्ध नहीं बन सकता। कन्हाई पिता भी बनने को प्रस्तुत और पुत्र भी। यह केवल स्वामी ही नहीं बनता, आपमें दमखम हो तो इसे सेवक बनने में भी आपत्ति नहीं है।

'तोहि मोहि नाते अनेक, मानिये जो भावै।'

यह बात गोस्वामी तुलसीदास की एक विनम्र सेवक की। जो आपको रुचे सो यह बात सेवक ही कह सकता है। आवश्यक नहीं कि आप भी यही कहें। आपको जो रुचे वह बनाइये इस गोपकुमार को, किन्तु पहले देखिये कि आपके हृदय में सचमुच उस सम्बन्ध की माँग है या नहीं। आप उस सम्बन्ध के प्रति सच्चे रहेंगे तो कन्हाई भी सच्चा रहेगा।

आप कन्हाई को पुत्र या छोटा भी कहें और मंदिर में मत्था टेकें, स्तवन करें, आशीर्वाद देने में हिचकें तो आपका सम्बन्ध सच्चा है? कन्हाई को अपना कुछ बना भी लें और चिन्ता, भय, लोभ बचे रहें, संभव है। आपको इससे प्रेम करना है तो इससे सम्बन्ध जोड़िये, पर वह सम्बन्ध जिसे आप जीवन में सच्चा बना सकें। ●

पं. श्रीरामकृष्ण दास बाबाजी

● साभार : 'ब्रज के सन्त'

जयपुर के अन्तर्गत एक गाँव में आपका जन्म हुआ। सन् १८१४ में ८ वर्ष बाद आपको पिता का वियोग सहना पड़ा। आप ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए। आप जयपुर के अध्यापक वंश से थे। प्रसिद्ध है कि आपके पितामह को अश्वारोही श्रीरामजी के दर्शन हुए थे।

जब एकबार ७–८ वर्ष की उम्र में दूर एक गाँव से जल लेने जा रहे थे, राह में एक व्याघ्र को मनुष्य को खाते देखा, किन्तु आप निर्भय उसी पथ से चले गये। जब पूछा बचकर क्यों न गये? बोले, 'जब व्याघ्र को खाद्य पदार्थ मिल गया था, तो फिर वह मुझ पर आक्रमण क्यों करता?'

आपकी बुद्धि विशाल थी, ६ वर्ष की अवस्था में पाणिनी व्याकरण का अध्ययन कर लिया। उसी समय एक प्रसिद्ध गायक से शिक्षा प्राप्त कर गायन में भी प्रवीणता प्राप्त की। पश्चात् श्रीवृन्दावन में आकर बंगला का अध्ययन किया और श्रीगोविन्दलीलामृत कण्ठस्थ कर किया। षड् सन्दर्भ व श्रीमद्भागवत का खूब अध्ययन किया। उर्दू भाषा में पारंगत थे, वेदाध्ययन भी समाप्त कर लिया। वृन्दावन में १३ वर्ष की आयु में आये थे और २० वर्ष की अवस्था प्राप्त होने पर अपने अध्ययन समाप्त कर यहाँ सिद्ध नित्यानंद दास बाबाजी से मंत्र दीक्षा ली और भजन में तीव्रता से लग गये। गुरुजी की आज्ञा से भजन करने को बरसाने एकान्त में चले गये। वहाँ कीर्त्तनिया श्रीगौरचरन दास से प्रभावित हो संकीर्त्तन में विशेष रुचि हो गई। भजन में कमी होने लगी। सिद्धबाबा ने यह सुना तो इनको श्रीवृन्दावन वापस बुला लिया। भजन में लगा दिया। सिद्धबाबा की आज्ञा से पुनः यह बरसाने गये किन्तु भजन में उनकी अरुचि देख श्रीगुरु आज्ञा से उद्धव क्यारी पर ७० दिन श्रीगोपाल मंत्र का पुरश्चरण किया। वहाँ कदम्ब वृक्ष के नीचे श्रीप्रिया प्रियतम के साक्षात् दर्शन हुए। वर माँगने को कहा तो बोले, 'गुरु आज्ञा से भजन करता हूँ। क्या माँगना चाहिए मुझे मालूम नहीं। आप प्रसन्न रहें यही चाहता हूँ।' आज्ञा हुई, राघव की गुफा में जाकर भजन करो। जाकर उस गुफा में जहाँ हिंसक पशु रहते थे' ६ वर्ष तक देहानुसंधान बिसराकर भजन किया। इनकी माता इनको खोजते–खोजते वहाँ आई, किन्तु यह अवसर पा अपनी गुदड़ी कडुआ लेकर चले गये। माँ दुखित हो लौट गई। इनका चित्त भजन में न लगा, तब वैष्णवगण ने कहा माँ के दुःखी होने से ऐसा है। सो माँ को बुला लिया। उसकी सेवा करने से भजन में कमी हो गई तब कृष्णचैतन्य बाबा को उनकी सेवा में पूँछरी (गोवर्धन) में रख दिया। ७–८ वर्ष पश्चात् इनकी माता जब अन्तर्धान हो गई तब पुनः चित्त भजन में आवेश से लगा।

एकबार श्रीमहाप्रभु के मंत्र के विषय में वैष्णवों में विवाद छिड़ गया, सो यह भागकर बरसाने मोर कुटी पर चले आये। वहाँ गुप्त रूप से आठ वर्ष वास किया। उस समय वहाँ तीन विस्मयकारी घटनायें हुईं–

(१) एक बार पत्थर के कोयले की आग गुफा में ले गये और दरवाजा बन्द कर दिया।

यह प्रसिद्ध है कि उसकी गैस से मृत्यु हो जाती है। इनको यह मालूम न था। यह बेहोश हो गये, लेकिन किसी अलक्ष्य देवता ने उसी अवस्था में इनको बाहर गुफा से फैंक दिया। जब चेतना हुई तो देखा बाहर पड़े हैं। कई दिन बाद चलने फिरने की शक्ति आई।

(२) एक दिन पूँछरी के श्रीगंगामन्दिर में पूए का प्रसाद बटा किन्तु दो हरिजन चोरों को न मिला तो यह समझकर कि पंडित बाबा को तो मिला ही होगा, इनकी गुफा पर आ रात्रि में पुकारा, जब इन्होंने कहा मेरे पास पुआ नहीं है तो लाठी की मार से इनका सिर फोड़ दिया। जब खोजने पर गुफा में पुआ न मिला तो एक ऊन का टुकड़ा ला इनकी पट्टी बाँध भाग गये।

(३) एक दिन एक विषधर इनके गले व छाती से लिपट गया। फिर बहुत देर बाद आप ही चला गया। उसी रात्रि को इन्हें एक शब्द सुनाई दिया कि इस गुफा को छोड़कर चले जाओ। तब बाबाजी श्यामकुटी, कुसुम सरोवर पर चले आये।

एकबार, जब यह गुफा में निवास करते थे, ग्वालियर के राजा माधवराव के ज्येष्ठ भ्राता बलवन्तराव इनके पास आए और श्रीकृष्ण–चैतन्यदास से दीक्षा दिलवाने की इनसे बात की थी किन्तु सहसा इनके अर्न्तध्यान हो जाने से आपने उन्हें गोपीनाथबाग के श्रीकेशवदेव जी से दीक्षा दिलवा दी। श्यामकुटी में अवस्थान करते समय बलवन्तराव अपनी माता के १४ लाख रुपये के आभूषणों को वैष्णवों में गुप्त दान करने के उद्देश्य से, ६ लाख रुपये के आभूषण इनको देने के लिए लाये किन्तु आपने अस्वीकार कर दिये और श्रीगौरशिरोमणि के शिष्य श्रीहरिचरणदासजी के पास इन्हें यह कहकर भेज दिया कि वे अर्थ द्वारा मंदिर निर्माण, ठाकुर सेवा व्यवस्था एवं निष्किंचन वैष्णवों की यथा योग्य सेवा करने में नियुक्त एवं समर्थ हैं, वहाँ आप देवें।

श्यामकुटी में श्रीगौरांगदास जी एवं प्रिया–शरणदास जी इनके आनुगत्य में भजन करने लगे। राजर्षि बनमाली राय एवं राजर्षि मामीन्द्रचन्द्र नंदी आदि सत्संग लाभ के उद्देश्य से इनके पास आते जाते थे। इनके पश्चात् श्रीकृपा– सिन्धुदास जी ने आकर इनके चरणों में आत्म– निवेदन किया।

१९१८ में आप इन्फुलुएंजा से ग्रस्त हुए। श्रीकामिनीकुमार घोष एवं श्रीदिनेशचरण दास आपको श्रीमदनमोहन बगीचे में ले गये। श्रीगोवर्धन में उन दिनों प्लेग फैला था। आप वृन्दावन में ही २ वर्ष रहे आए। क्यारीवन में एवं मदनमोहन बगीचे में ३ वर्ष रहकर आपने श्रीगौरांगदास जी को संदर्भादि वैष्णव दर्शन का अध्ययन कराया। श्रीकृपासिन्धुदासजी की सेवा अंगीकार करते हुए आपने भजन एवं वैराग्य आदि द्वारा उन पर तीव्र शासन किया।

श्रीवृन्दावन में यमुना में बाढ़ आ जाने पर आप मिर्जापुर वाली धर्मशाला में ६ मास रहे और फिर करौलीकुंज में चले गये। वहाँ मलेरिया से आक्रान्त हो गये। मरणासन्न होने पर श्रीकृपा–सिन्धुदास को दारुण दुःख हुआ। स्वप्नादेश से श्रीमहाप्रभु की कृपा लाभ हुयी। १९३२ में दाऊजी के बगीचे में आकर आप कुछ स्वस्थ हुए और दोनों भजन में कुछ आविष्ट हुए। भजन में अधिक

अभिनिवेश होने से श्रीकृपासिन्धुदासजी पण्डित बाबा की सेवा में उदासीन हो गए। पण्डित बाबा पुनः अत्यन्त रोगाक्रान्त हो गये। आप मथुरा अस्पताल में जाकर मूर्च्छित रहे आए। श्रीमहाप्रभु ने श्रीकृपासिन्धु पर स्वप्न में क्रोधावेश द्वारा तीव्र शासनरूपी अनुग्रह किया। वह भजन–अभिनिवेश त्यागकर फिर पण्डित बाबा की सेवा में जुट गये और पण्डित बाबा भी भजन के प्रगाढ़ आवेश में, बाह्यावेश रहित हो दिन–दिन अर्न्तध्यान रहने लगे। आहार–विहारादि एवं देह की पुष्टि का भार तथा देह रक्षा धर्मादि सब श्रीकृपासिन्धुदासजी पर छोड़ निश्चिन्त हो भजनाभिनिविष्ट हो गये। श्री भूगर्भ गोस्वामी के पुत्र श्री विनोदबिहारी वेदान्तरत्न को आपने एक दिन वेशाश्रय देकर कृतार्थ किया।

श्रीपण्डित बाबा में श्रीइष्टनिष्ठा, वैराग्यनिष्ठा, अकिञ्चन भक्ति–निष्ठा, श्रीगुरुनिष्ठा, व्रतनिष्ठा सम्प्रदायनिष्ठा (महत्परम्परा–निष्ठा) प्रभृति सभी पूर्णरूपेण विद्यमान थीं।

आपके भजन प्रभाव से समस्त गोस्वामी वृद्ध व्रजवासी एवं विरक्त सभी आप में गुरुबुद्धि रखते। आप में एक अचिन्त्यशक्ति यह थी कि चारों सम्प्रदाय आपका पूर्ण सम्मान एवं अपने में अग्रगण्य एवं अनन्य उपासक–भाव रखती थीं। यही कारण था अपने–अपने गूढ़ रहस्यों की जिज्ञासा के लिए सभी सम्प्रदायों के व्यक्ति आपके पास आया करते। कितने जिज्ञासुओं की जिज्ञासा तो केवल मात्र श्रद्धा युक्त हो आपके पास बैठने मात्र से ही हल हो जाती। रामानुजसम्प्रदाय के आचार्य षड्दर्शनाचार्य श्रीसुदर्शनाचार्य कहा करते–'शास्त्र के किसी भी कठिन विषय की मीमांसा का समाधान न होने पर पण्डितबाबा के सम्मुख बैठने मात्र से उसका समाधान स्वयं ही हो जाता।' इसी प्रकार ही प्राणगोपाल गोस्वामीपाद ने कहा है कि– अनेक समस्यायें इनके निकट बैठने से स्वयं ही हल हो जाती हैं।

शृंगारवट के प्रभुपाद गोस्वामी श्रीदेवकीनदंन जी महाराज ने एक आप बीती घटना सुनाई, वह यह कि प्रभुपाद भी समय–समय पर उनसे मिलने को कुटिया पर जाया करते। एक दिन इन्होंने पण्डित बाबा से कहा– "बाबा! मुझ पर भी कृपा करो न।' पं. बाबा हँस पड़े और बोले– 'गोस्वामी होकर मुझसे ऐसा कहते हो।' उसी दिन जब प्रभुपाद परिक्रमा के रास्ते शृंगारवट लौट रहे थे तो अचानक क्या देखते हैं कि पुराने मदनमोहन मंदिर के पीछे नाले में वहीं एक गोपबालक गैया दोहन कर रहा है। अलौकिक थी वह गैया और विलक्षण वेष–भूषा थी उस अति सुन्दर गोपबालक की। प्रभुपाद स्तब्ध हो

गये यह सब देखकर। कुछ रुक गये तो, गोपबालक बोला– 'गोस्वामी! क्या देखते हो, चलो, मेरी गैया लात देगी।' प्रभुपाद पर कुछ मोहनी सी पड़ी। मुँह मोड़कर एक कदम आगे बढ़े। परन्तु मन नहीं माना। एकबार फिर मुड़कर देखना चाहा। परन्तु वहाँ अब क्या था? न बालक था न गैया। अति व्याकुल हो रोते–रोते पण्डित बाबा के पास पहुँचे। बाबा ने कहा, 'गोस्वामि! तुम बड़भागी हो, हमें तो इतना भी देखने को नहीं मिला।' आश्वस्त कर गोस्वामी जी को घर भेजा। ऐसे अनेक चरित्र हैं पं. बाबा के।

आप दीनता की मूर्ति थे, कोई उनको साष्टांग दण्डवत् करता तो वे स्वयं उसको भी प्रणाम करते। अन्त तक माधुकरी व्रजवासियों के यहाँ करते रहे। ई. १९४० में (संवत् १९९७) वृन्दावन दाऊजी के बगीचे में श्रीगोविन्द अपनी प्रसादी माला के रूप में पधारे और इन्हें अपने धाम ले गये।

'पण्डित बाबा श्रीरामकृष्णदास' के अनेकों चरित्र हैं। गौड़ीय होते हुए भी सर्वसम्प्रदायी इनसे भजन की शिक्षा लेते थे। भजन–नियम के इतने पक्के कि भले ही प्राण चले जाँय लेकिन एकादशी–व्रत निर्जल ही रखना है। इनका रमणरेती वृन्दावन में एक विशाल भूखण्ड पर अति–सामान्य सी कुटियाओं से युक्त 'भागवत–निवास' नामक एक आश्रम है, मन्दिर है, सेवा–पूजा है। आज भी यहाँ निष्किंचन महात्मा परम निष्ठा से भजन करते हैं। व्रजवासियों से माधुकरी माँग कर शरीर रक्षा करते हैं। आज भी कोई स्त्री, भले ही वह किसी बाबा की पूर्वाश्रम की माता क्यों न हो, भागवत निवास में रात्रि में नहीं रह सकती है। जो जानते हैं उन्हें पता है कि इस आश्रम में किसी प्रकार की कोई भव्यता, नाटकबाजी, चाल–चपट, महन्ताई, आदि कलियुगी लक्षणों का प्रवेश नहीं है।

आज रमणरेती का क्षेत्र बहुत महँगा क्षेत्र है। इस पर पता नहीं किसकी दृष्टि से नजर पड़ गयी है। यहाँ रहने वाले बाबा, वैष्णव आदि परम निष्किंचन हैं। बाहरी संसार से अनभिज्ञ हैं। झूठ–फरेब, झंझट क्या होते हैं–इनसे कैसे निबटा जाता है; ये कुछ नहीं जानते।

इनकी वैष्णवता एवं इस सज्जनता का दुरुपयोग करते हुए कोई इस स्थान से इन वैष्णवों को भगा कर स्थान कब्जाना चाहता है–ऐसी अफवाह नगर में है और साथ ही यह भी सुनने में आ रहा है कि वैष्णव वृन्द ने कहा है कि हम अपने इस स्थान को, यहाँ के मन्दिर की सेवा–पूजा को शरीर रहते नहीं छोड़ेंगे। आवश्यकता पड़ी तो यहीं आत्मदाह करेंगे। समाचार पत्रों से यह पता चलता रहता है।

इस विषय में माफिया और कुछ तथाकथित नेता दोनों पक्षों के साथ हो लिए हैं। वास्तविकता तो यह है कि शायद ही कोई निःस्वार्थ हो। हर व्यक्ति अपनी रोटियाँ सेकने की फिराक में होगा। समय की यही स्थिति है।

भागवत–निवास का अपना एक बहुत बड़ा शिष्य–श्रद्धालु परिकर है, लेकिन बाहर रहने के कारण इन सब बातों से अनभिज्ञ है। यदि आप सक्षम हैं तो आइये इन वैष्णवगण की सहायता करें और इस दिव्य 'भागवत–निवास' की रक्षा कर सिद्ध बाबा की कृपा प्राप्त कर अपना जीवन धन्य करें।

सन्तों के सम्प्रदाय और विश्वकल्याण

● श्री विष्वक्सेनाचार्य जी, वृन्दावन

विश्वसृष्टि के बाद मानव जब से कुछ समझने लगा तभी से इसे स्वयं के और विश्व के कल्याण के लिये ईश्वरीय या आकाशीय असामान्य दर्शन और बोध होने लगा। असामान्य कुछ कार्य करने की प्रेरणायें भी मानव ऊपर से पाता रहा है, कुछ साक्षात् और अधिकांश परम्परा से। प्रेरणा पर चलने वालों को हम सन्त कहते हैं और प्रेरणाओं को सम्प्रदाय। प्राचीन काल में दीर्घजीवी महातपस्वी ऋषि मुनि होते थे, उन्हें तप के अनुरूप कल्याणमय ईश्वरीय ज्ञान और मन्त्र प्राप्त होते थे। उन मन्त्रों के संग्रह आज वेद कहे जाते हैं। वेदों को यानी ईश्वरीय प्रेरणाओं को ईश्वर के समान ही अनादि नित्य सिद्ध एवम् पूर्ण श्रद्धा के योग्य माना गया है, यह मान्यता भी ईश्वरीय संकेत से ही बनी है। इस संकेत को झुठलाने वाले भी सम्प्रदाय हुए बौद्ध, जैन और चार्वाक। इन्हें भी कुछ ईश्वरीय जैसी ही प्रेरणायें मिली हैं। विदेशों में दो सम्प्रदाय बने हैं ईसा और मुहम्मद के। ये भी प्राचीन भारतीयों की भाँति ईश्वरीय प्रेरणायें बतलाते हैं। इनके ग्रन्थों में पुराने कुछ और भी सम्प्रदायों के नाम हैं। उन्हें तख्तियों पर लिखे ईश्वर के आदेश पहाड़ों पर मिले थे, फिर भी उन ईश्वर के भक्तों ने अपने ईश्वर के हाथ पैर नहीं माने।

ईश्वर बड़ा ही उदार है, वह शुद्ध सात्त्विक तपोमय चित्तों में प्रेरणा देकर ईश्वरवादी ऋषि मुनि बनाता है तो अज्ञानग्रस्त जिज्ञासु चित्रों में प्रेरणा देकर जैन, बौद्ध, चार्वाक भी बना देता है। इतना ही नहीं, वह तो उन्हें भी प्रेरणा दे देता है जो कोई जिज्ञासा नहीं रखते, जो केवल अर्थकाम परायण होने से हिंसामय जीवन जीते हैं। उन्हें उनके चित्त की बनावट के अनुसार भावी पापमय पीढ़ियों के चलने के लिये विद्रोह और हिंसा का मार्ग भी धर्म कहकर पकड़ा देता है, पापियों का धर्म पाप ही होता है, समर्पण का भाव आ जाने से पाप का फल भी शुभ होने लगता है, प्रवृत्तियों में सुधार होता है, कल्याणमय मार्ग दूर से दीखने लगता है। किन्तु समर्पण का भाव ईश्वर की विशेष कृपा के बिना किसी का बन नहीं पाता, पाप–परायण जन तो इससे ज्यादा ही दूर रहा करते हैं, फलतः स्वयं को मिली ईश्वरीय प्रेरणा में चमकता हुआ भी समर्पण का भाव पापियों को वैसे ही नहीं दीख पड़ता जैसे उल्लुओं को प्रातः सायं का भी सूर्य। इससे ईश्वरीय प्रेरणाओं को वे केवल अपनी हिंसामय प्रवृत्तियों का मूल मान कर चलते रहते हैं। तब मानव ही मानव का शिकार बनने लगता है। यों तो बिना प्रेरणा के भी असभ्य मानव स्वयं मरे मानव को खाता आ रहा है, छिपकर वह जीवित को भी मारकर खा लेता है। दिल्ली के पास एक ऐसे होटल का पता चला है जहाँ मानवों को गुप्त रूप से मारकर उनका मांस पकाकर बेचा जाता था। केस चला, फैसला सुनाई नहीं पड़ा है।

प्रेरणायें और भी हजारों देखी सुनी जाती हैं, मनोबल की कमी से उनका प्रचार नहीं हो पाता। कुछ प्रेरणायें स्वप्न में मिलती हैं, उन्हें भी प्रमाण मानकर मानव बड़े–बड़े भले बुरे कर्म कर लेता है। सच पूछें तो मानव की या अन्य प्राणियों

की सारी गतिविधियाँ सहज या असहज प्रेरणाओं के परिणाम हैं। कोई बकरी रोड पर खड़ी थी, पीछे से मोटरसाईकिल आ रही थी, निकट आने पर गाड़ी की ओर ही मुड़ने की उसे अन्तःप्रेरणा मिली, बाहरी कोई प्रेरणा नहीं थी इससे चालक सम्हाल नहीं पाया, टक्कर हुई, बकरी और चालक घायल हुए, टक्करें प्रतिक्षण होती ही हैं, कमवेशी बुरे, और कभी भले भी परिणाम होते हैं, प्रेरणायें भी होती रहती हैं। मैत्री और वैर अन्तःप्रेरणाओं के ही परिणाम होते हैं। अन्तः प्रेरणाओं से ही कोई आत्मकल्याण की ओर, कोई अभ्युदय की ओर, कोई पराभव की ओर और कोई मृत्यु की ओर बढ़ता पाया जाता है।

सोचने की बात है कि कुछ ही प्रेरणायें क्यों सम्प्रदाय बन जाती हैं, बाकी क्यों काल में लीन हो जाती हैं, बने सम्प्रदाय भी अपनी एक समय सीमा के बाद क्यों मिट जाते हैं। ऋषि–मुनियों के सम्प्रदाय आज क्यों अज्ञान के पर्दे में चले गये। चिरतपस्वी, ज्ञाननिधि, अति उदार, दयावान् वेदव्यास का सम्प्रदाय अभी क्यों नहीं चल रहा, फिर जो जो आधुनिक सम्प्रदाय चल रहे हैं वे वेदव्यास के सूक्ष्मतम चिन्तनों से कितना हट पाये हैं। क्या कारण है कि आज का समाज वेदव्यास को अतिशय श्रद्धा से अपना गुरु नहीं मान पा रहा है। उत्तर एक ही है कि पुराने कल्याणमय चिन्तन आज के पापमय मानव को आत्मसात् नहीं हो पाते। आज का मानव हिंसा प्रधान हो गया है। इसे बम काण्ड अच्छा लगता है। अपनी सड़ियल सभ्यता के अनुसार यह विस्फोटों से केवल बचाव की बातें करता है। बचाव के उद्यम से कोसों दूर रहना चाहता है। ऐसे हत भागी नये समाज को वेदव्यास के दर्शन चिन्तन और सुझाव कैसे अच्छे लगेंगे। इसे तो स्वभाव से ही वे सम्प्रदाय अच्छे लगते हैं जिनमें गोमांस भक्षण धर्म माना जाता है। आज भारत में ब्राह्मणादि वर्णों के हजारों ऐसे लोग हैं जिन्हें दम्भ, पाखण्ड, स्वार्थ, प्रमाद और हिंसा में सहज अभिरुचि है। इन्हें भारतीय धर्म और दर्शन रुचता नहीं, हिंसामय दर्शन बहुत भाता है। हिंसक दर्शनों पर इनकी गूढ़ सहानुभूति रहती है। फलतः उनकी पापमय प्रवृत्तियों पर इनका मौन समर्थन रहता है। उनकी सन्तुष्टि के लिये अपना सब कुछ कुर्वान करने को ये तत्पर ही रहते हैं। यही तो नये युग की नयी किस्म की इनकी मानवता है। विस्फोटक संगठन जो बकते रहते हैं कि विस्फोटों के द्वारा हम समाज में क्रान्ति ला रहे हैं, इन्हें वेदवाक्य जैसे प्रमाण लगते हैं। मानव समाज की रक्षा और विकास का शाश्वत साधन धर्ममय राजनीति इन्हें खलती है। धर्म के विरोध में ये घण्टों बोल सकते हैं किन्तु धर्म का सही लक्षण और उदाहरण इनके हृदय में टिकता नहीं। ये यदि दैववश वेदादि ग्रन्थ कुछ पढ़ या सुन लेते हैं तो उस ज्ञान का उपयोग धर्म के विरोध में ही करते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने इन्हें ही लक्ष्य करके गीता में कहा है– **"अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसाऽऽवृता। सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी"** यानी सारे अर्थों पर उलटा सोच तमोगुण का कार्य है।

इस तरह हम देखते हैं कि श्रुतिस्मृति इतिहास पुराणों में ईश्वरीय प्रेरणाओं के जितने भी कथानक वर्णित हैं उनका और आधुनिक समाज में आधुनिक ईश्वरीय प्रेरणायें जो कुछ मानी जा रही हैं, उनका एवं रोड वाली उस बकरी की उक्त अन्तः प्रेरणा का मूल सर्वान्तर्यामी

ईश्वर की पूर्व कर्मानुसारी सामान्य प्रेरणा ही है। अन्तर्यामी की प्रेरणा के सिवा दूसरी कोई ईश्वरीय प्रेरणा नहीं होती। अन्तर्यामी सदा अज्ञात रहते हैं, किन्तु उनकी प्रेरणा प्राणिमात्र को स्मृति, ज्ञान, इच्छा, उपेक्षा, विस्मरण आदि के रूप में ज्ञात ही रहती है। कोई पहले से यह नहीं जानता कि मुझे कब क्या स्मृति हो जायेगी, वह तो केवल अन्तर्यामी के अधीन होती है। प्रेरक ईश्वर और अन्तर्यामी में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष का भेद महत्त्व नहीं रखता। ईश्वर साक्षात्कार भी अन्तर्यामी की एक प्रेरणा ही होता है। विषय के अभाव में भी उसका साक्षात्कार स्वप्न, समाधि और जागृत अवस्था में भी बहुतों को बहुधा हो जाता है। ब्रह्मा जी को भगवान् के सुन्दरतम साकार रूप का दर्शन होता है किन्तु वह रूप भगवान् का ही है और सर्वोत्कृष्ट है यह ज्ञान अन्तर्यामी की प्रेरणा से होता है। अन्तर्यामी की विपरीत प्रेरणा से कुछ लोग उस रूप को ईश्वरीय नहीं मानते, अपने पक्ष में कई तर्क प्रमाण भी रखते हैं। उनकी प्रेरणा से ही बहुतों ने निराकार वाद को ठुकराया है। उनकी प्रेरणा से दोनों वादों में सामञ्जस्य समझ में आता है। पूर्व कर्मों के अधीन ही विविध प्रेरणायें होती हैं। नाना सम्प्रदाय वादों का यही रहस्य है। यहाँ एक बात ध्यान में रखने की है कि अन्तर्यामी की प्रत्येक प्रेरणा सामयिक और कल्याणमयी होती है। पापी मानव प्रेरणाओं को स्वार्थ के पर्दे में छिपा कर उनका दुरुपयोग करता है, इसी से सारे सम्प्रदाय आज व्यर्थ से लगते हैं। स्वार्थ के पर्दे से बाहर निकल कर प्रेरक ईश्वर के तुल्य आदर देते हुए यदि उन्हें जीवन में उतारा जाये तो निम्नतम सम्प्रदाय से भी परम मुक्ति सुलभ होगी। क्योंकि स्वार्थ के दोषों से मुक्त सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदायों के उपयोगी सारे अर्थ लेता ही रहता है, इससे वह पूर्ण होता है।

जो लोग कहते हैं कि सम्प्रदायों से आज तक समाज का हित नहीं हो पाया वे निष्क्रिय एवं विकृत ज्ञान की विफलता घोषित करते हैं। जो लोग सम्प्रदायों पर दृढ़ आस्थावान् हैं वे दो प्रकार के हैं, कुछ तो बाहरी रूप रेखाओं को ही अज्ञानवश सम्प्रदाय मानते हैं और मोहवश उसी से कल्याण की कल्पना लिये हैं, दूसरे वे हैं जो मंगलमय कर्मों के प्रयोजक तत्त्वदर्शन को सम्प्रदाय मानते हुए प्रेरक किसी सदाचार्य के प्रति निष्ठावान् हैं। इन दूसरे वर्ग के महापुरुषों से ही विश्वशान्ति की सम्भावना है। वास्तव सम्प्रदाय एक ही है शुद्ध परिपूर्ण ईश्वरीय ज्ञान। शान्ति के लिये समाज में इसका प्रचार प्रसार आवश्यक है। इसके लिये शिक्षा के स्तरों का सुधार और उचित विषयों का समावेश एवं शिक्षातन्त्र में पूर्ण नैतिकता की स्थापना आवश्यक है। समाज का वर्तमान परिवेश इसके बहुत विपरीत है फिर भी आतंकियों के धन्धे हमें आत्मरक्षा के लिये प्रेरित तो कर ही रहे हैं। सम्भव है भावी पीढ़ी के सौभाग्य से हम चेतकर सन्मार्ग देखें, बनायें और उस पर चलें।

मत समझना हम कहीं कुछ जानते हैं,
कर्म वश आहार ही पहचानते हैं।
कर्म अच्छे हर समय करते चलेंगे,
मित्र बनकर मित्र से मिलते चलेंगे।
ईश शाश्वत मित्र को ना भूल जायें,
घास फूसों पर वृथा ना फूल जायें।
सम्प्रदाय यही सुभग नरमात्र का है,
बोध हो ऐसा यही फल गात्र का है।

नव-दुर्गा

• कविवर श्री राधागोविन्द पाठक, बलदेव

प्रथम सैल पुत्री भई जग जीबन कल्यान।
सारदीय नब रात में सिद्धी करत प्रदान।।1।।
द्वितीय ब्रह्म चारिनी ज्योतिर्मय हे मात।
नारायनी नमोस्तु ते लाज तिहारे हाथ।।2।।
तृतीय चन्द्र घन्टेश्वरी भगबति रूप निदान।
पूजें फल पामें सदाँ, साधक सुजस सुजान।।3।।
चतुर्थ रूप कुस्मान्डाय दुर्गा दुर्ग प्रधान।
त्रिविध ताप हरनी सदाँ, दीजौ दुर्गम ज्ञान।।4।।
पंचम स्कन्द माताय बाहन बिमल मयूर।
सुभदा जी पद्मासना दया करत भरपूर।।5।।
सस्ठी माँ कात्यायनी दिव्य सरूपा सार।
महिमासुर मदभेदनी अभय दान दातार।।6।।
हे माँ दुर्गा सप्तमी काल रात्रि है नाम।
अम्बे सुभ फल दायनी सिद्धि रिद्धि सुख धाम।।7।।
अस्टम महागौरी पुजै, सोभा परम बिसाल।
धनुधर चारौं भुज लसै, चन्द्र बिराजत भाल।।8।।
नबदुर्गा कमलासनी हे माँ सक्ति निधान।
सिद्धि दात्री दीजियो श्रीबृद्धी बरदान।।9।।

भक्ति-रस

● डॉ. भागवतकृष्ण नांगिया, वृन्दावन

• पूर्व क्रमागत

१–साधन भक्ति–

साधन भक्ति के ६४ अंग माने हैं, उनमें से ६ अंग सर्वप्रमुख हैं, जिन्हें जीव गोस्वामी ने **"नवविधा भक्ति"** की आख्या प्रदान की है। ये हैं–

(१) **श्रवण**–भगवान् श्री विष्णु के नाम–गुण–रूप–परिकर–लीला सम्बन्धी शब्दों का कानों से सुनना।

(२) **कीर्तन**–भगवान् श्रीविष्णु के नाम–गुण–रूप–परिकर लीलामय शब्दों का उच्चस्वर में गान या उच्चारण।

(३) **स्मरण**–भगवान् श्रीविष्णु के नाम–रूप–गुण–परिकर–लीला आदि का चिन्तन अर्थात् मन के द्वारा उनका यत्किंचित् अनुसंधान।

(४) **पादसेवन**–श्रीविष्णु चरण की काल देश आदि के अनुरूप उचित सेवा करना।

(५) **अर्चन**–श्रीभगवान् की अथवा उनके श्रीविग्रह की शास्त्र में बतायी विधि के अनुसार पूजा।

(६) **वन्दन**–श्रीभगवान् को नमस्कार करना।

(७) **दास्य**–"मैं श्रीभगवान् का दास हूँ"–ऐसा अभिमान और उसके अनुरूप उनकी सेवा करना।

(८) **सख्य**–बन्धुभाव से श्रीभगवान् का हित सम्पादन करना।

(९) **आत्मनिवेदन**–शरीर से लेकर शुद्ध आत्मा पर्यन्त सर्वतोभाव से श्रीभगवान् को अर्पण कर देना।

उपरोक्त नौ प्रकार के लक्षण जिस भक्ति में हों, उसे उत्तम मानना चाहिये। भक्त के लिए आवश्यक है कि नौ प्रकार के भक्ति–आचरणों का पालन करे। यह आवश्यक नहीं कि कोई सभी ६ प्रकार की भक्ति का आचरण करे। किसी एक प्रकार की भक्ति करने पर भी अथवा थोड़ा–बहुत किसी अन्य प्रकार की भक्ति के साथ करने पर भी साधक को साध्य की प्राप्ति हो जाती है।

साधन भक्ति "सकामा और कैवल्यकामा" कही गयी है। उपासकों के संकल्परूप गुणों के अनुसार साधनभक्ति के ये दो प्रकार हुए हैं। सकामा भक्ति पुनः दो प्रकार की है–तामसी एवं राजसी।

तामसी भक्ति के पुनः ३ प्रकार हैं–

१–अधम तामसी, २–मध्यम तामसी, ३–उत्तम तामसी– जो व्यक्ति दूसरे के विनाश के लिए श्रद्धासहित श्रीभगवान् का भजन करते हैं उनकी भक्ति "अधम तामसी" है।

व्यभिचारिणी स्त्री जैसे कपटपूर्वक अपने पति की वंचना करते हुए भी सेवा करती है, उसी प्रकार कपटपूर्वक जो श्रीहरि की सेवा करता है वह "मध्यमतामसी" है। जो भक्ति किसी अन्य व्यक्ति को देवाराधन में प्रवृत्त देखकर स्पर्द्धावश श्रीहरि की अर्चना करता है उसकी भक्ति को "उत्तम तामसी" कहा जाता है।

कैवल्यकामा सात्विकी होती है और वह भी दो प्रकार की है–१–कर्मज्ञान मिश्रा, २–ज्ञानमिश्रा।

प्रकार भेद से साधन भक्ति दो प्रकार की कही गयी है–

१–वैधी भक्ति २–रागात्मिका भक्ति

१–वैधी भक्ति–

श्रवण–कीर्तनादि जो नवविधा भक्ति है, यदि वह शास्त्र शासन के भय से की जाती है, उसे वैधी भक्ति कहते हैं। भक्तिमार्ग के साधक की

दो श्रेणियां हैं उनमें से एक श्रेणी के साधक वे हैं जो भगवान् के प्रति प्रीतिवश भजन में प्रवृत्त नहीं होते वरन् संसार–दुःख से छुटकारा पाने के लिए ही भगवान् की भक्ति करते हैं अर्थात् शास्त्र विधि के भय से ही उसमें प्रवृत्त होते हैं ऐसे–साधकों की भक्ति को वैधी भक्ति कहा जाता है।

२–रागात्मिका भक्ति–

राग से तात्पर्य है–अनुराग अथवा प्रेम या प्रीति। अर्थात् जो श्रीकृष्ण सेवा में प्रीति रखते हैं या उनकी भगवत् सेवा में अनुराग अथवा आसक्ति रखते हैं उनकी भक्ति को रागात्मिका भक्ति कहते हैं। लेकिन रागात्मिका भक्ति में जीव का अधिकार नहीं है। यह भक्ति केवल श्रीकृष्ण के ब्रज परिकरों में ही विद्यमान रहती है। जीव को केवल उन परिकरों के अनुगत रहकर ही भक्ति करने का अधिकार है। रागात्मिका भक्ति के आश्रय हैं–श्रीनन्द यशोदा, सुबल–मधुमंगल श्रीराधा–ललितादि सखियाँ। इनके अनुगत होकर सेवा करना या जिस सेवा के द्वारा वे श्रीकृष्ण को सुखी करते हैं, उस सेवा का आयोजन कर अनुकूल सहायता विधान करना ही जीव का परम कर्त्तव्य है। अतः जीव द्वारा की गयी ऐसी भक्ति रागानुगा भक्ति कहलाती है। रागात्मिका भक्ति दो प्रकार की है–१–सम्बन्धरूपा, २–कामरूपा।

सम्बन्ध रूपा–भगवान् के मधुर, दास्य, सख्य एवं वात्सल्य चारों भावों के परिकरों का उनके साथ संबंध का अभिमान रहते हुए भी मधुर भाव के उपासकों को छोड़कर शेष तीनों प्रकार के भावों के उपासक सम्बन्ध की मर्यादा का उल्लंघन कर सेवा नहीं करते न ही उनमें ऐसी इच्छा ही होती है।

इसलिए उनकी सेवा या भक्ति सम्बन्धानुगा है। उदाहरणार्थ कोई दास्य भाव का परिकर किसी अत्यधिक मधुर वस्तु को खाते समय उस वस्तु को अपने उपास्य को अर्थात् श्रीकृष्ण को अर्पण की इच्छा रखते हुए भी अपना झूठा होने के कारण उन्हें नहीं देता। लेकिन सख्य भाव का परिकर ऐसा करने में जरा भी संकुचित नहीं होता। ऐसे ही वात्सल्य भाव के परिकर जैसे नन्द यशोदा अपने पुत्र श्रीकृष्ण को ताड़ना भर्त्सना भी निसंकोच ही कर देते हैं। अतः इन तीन प्रकार के परिकरों में पहले सम्बन्ध रहता है और बाद में सेवा।

कामरूपा–एकमात्र कृष्णप्रेयसी ब्रजसुन्दरियों की रागात्मिका भक्ति कामरूपा है। यह भक्ति उपरोक्त सम्बन्धरूपा की भाँति सम्बन्ध की अपेक्षा नहीं रखती। येनकेन प्रकारेण श्रीकृष्ण की सेवा ही उनका काम्य है। श्रीकृष्ण का प्रीति विधान ही उनकी एकमात्र कामना होने से उनकी रागात्मिका को "कामरूपा" कहा गया है। श्रीकृष्ण की प्रीति विधान करने में यदि आवश्यक हो तो व्रजगोपीवृन्द देहधर्म, कुलधर्म, लोकधर्म, स्वजन आर्यपथादि समस्त का भी परित्याग कर सकती हैं।

२–भाव भक्ति–

साधन भक्ति करते–करते साधक का चित्त अपेक्षाकृत अधिक आर्द्र या स्निग्ध होने लगता है। तत्पश्चात् शुद्ध सत्त्व साधक के चित्त में आविर्भूत होता है और वह शुद्ध सत्त्व भाव या रति में परिणत हो जाता है। साधन भक्ति की उच्चतर अवस्था का नाम ही भाव भक्ति है। यह भाव भक्ति प्रेम भक्ति रूप सूर्य किरणों के सदृश है अथवा प्रेम भक्ति की अंकुर स्वरूपा है। इसे कृष्णरति भी कहा गया है।

यह कृष्णरति भक्तों के भेद से पाँच प्रकार की है–शान्त रति, दास्यरति, सख्यरति, वात्सल्य–रति और मधुर रति। यह पाँच प्रकार की रति अनुभाव विभावादि से मिलकर इन्हीं पाँच प्रकार

के रसों में परिवर्तित होती है पाँचों प्रकार की रतियाँ दो–दो प्रकार की होती हैं। प्रथम– ऐश्वर्यज्ञान मिश्रा–अर्थात् उसमें भगवान् के ऐश्वर्य ज्ञान का मिश्रण एवं ऐश्वर्य ज्ञान की ही प्रधानता रहती है। और द्वितीय केवला–केवला रति में भगवान् का केवल शुद्ध माधुर्यमय प्रेम ही प्रधान रहता है।

उनके ऐश्वर्य को देखकर भी केवला रति के भक्तों का प्रेम कभी संकुचित नहीं होता।

शान्त रति–श्री चैतन्यचरितामृत (२.१६.१७३) में कहा गया है–

शान्तरसे स्वरूपबुद्धये कृष्णैक निष्ठता।
"शमो मन्निष्ठाबुद्धैः" इति श्रीमुख गाथा।।

श्रीकृष्ण परब्रह्म हैं, परमात्मा हैं, इस बुद्धि से श्रीकृष्ण में जो निष्ठा है, वह शान्तरति का स्वरूप है। श्रीकृष्ण में बुद्धि की ऐकान्तिकी निष्ठा का नाम शम या शान्ति है। बुद्धि में भगवन्निष्ठा का होना शान्त रति का गुण है। जैसा–कि कहा गया है–

कृष्णनिष्ठा, तृष्णा–त्याग, शान्तेर दुईगुणे।।

श्री चै० च० २.१६.१७५

श्रीकृष्ण में निष्ठा तथा श्रीकृष्ण कामना को छोड़कर अन्य कामनाओं का त्याग–ये दोनों शान्त रति के गुण हैं। दोनों ही गुण "कृष्ण निष्ठा" अन्तर्भुक्त हैं। कृष्ण निष्ठा पाँचों प्रकार की रति में रहती है परन्तु शांत रति में श्रीकृष्ण विषयक ममता की गन्ध नहीं है–अर्थात् "श्रीकृष्ण मेरे हैं" ऐसा भाव इसमें नहीं रहता इसमें यह भाव रहता है कि "मैं श्रीकृष्ण का हूँ" इस रति का भक्त श्रीकृष्ण को परब्रह्म परमात्मा अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड–अधीश्वर ही जानते हैं और अपने को अति क्षुद्र जीव। वे अपने को श्रीभगवान् का मानते हैं पर भगवान् को अपना नहीं।

इस प्रकार के भाव में जहां ममता बुद्धि नहीं रहती वहां प्रेम भी नहीं रह सकता। क्योंकि प्रेम श्रीकृष्ण–इन्द्रियों की प्रीति–इच्छा का ही नाम है। श्रीकृष्ण का ऐश्वर्यज्ञान प्रधान रहने से ऐश्वर्य प्रधान वैकुण्ठ ही शान्तरति के भक्तों का गन्तव्य स्थान है।

दास्य रति–दास्य रति के भक्त भगवान् को अपना स्वामी और अपने को उनका दास मानते हैं। दास्यरति के सम्बन्ध में कहा गया है–

पूर्णैश्वर्य प्रभु–ज्ञान अधिक हय दास्ये
ईश्वर ज्ञान सम्भ्रम गौरव प्रचुर
सेवा करि कृष्ण सुख देन निरन्तर
शान्तेर गुण दास्य आछे अधिक सेवन
अतएव दास्य रसेर हय दुई गुण।।

श्री चै० च० २/१९/१७८–१७९

"श्रीकृष्ण पूर्ण ऐश्वर्य युक्त हैं" ऐसा ज्ञान दास्य भक्तों में शान्त रति के भक्तों की अपेक्षा अधिक प्रगाढ़ रहता है। दास्यरति के भक्त श्रीकृष्ण को ईश्वर मानकर अपने को उनका सेवक ही स्वीकारते हैं। वे सदा सेवा करते हुए श्रीकृष्ण को सुख देते हैं। शान्तरति में जो कृष्ण निष्ठा का गुण रहता है वह गुण इसमें भी रहता है परन्तु सेवा का गुण इसमें अधिक रहता है। अतः दास्य रति में कृष्ण निष्ठा एवं कृष्ण सेवा ये दो गुण विद्यमान रहते हैं। दास्यरति में रति, स्नेह, मान, प्रणय एवं राग–ये प्रेम के स्तर भी वर्तमान रहते हैं।

ऐश्वर्य ज्ञान मिश्रा भक्तियुक्त दास श्रीभगवान् की सेवा उन्हें अखिल ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म जानकर करते हैं और केवला भक्ति के दास भक्त श्रीभगवान् की सेवा उन्हें अपना स्वामी जानकर या भक्तवत्सल प्रभु जानकर करते हैं। वे उनको सुख देने के लिए सेवा करते हैं। ऐसे भक्तों का गन्तव्य है द्वारका, मथुरा एवं श्रीवृन्दावन।

सख्य रति–श्रीकृष्ण के सखाओं की श्रीकृष्ण के प्रति जो प्रीति है, उसे "सख्य–रति" कहते हैं। सख्य रति में शान्त रति का गुण कृष्ण–निष्ठा तथा दास्य–रति का गुण कृष्ण सेवा–ये दोनों तो रहते ही हैं, इनमें विश्रम्भ की प्रधानता रहती है। अर्थात् दास्यरति के भक्तों में जो गौरव बुद्धि रहती है कि "श्रीकृष्ण मेरे पूज्य हैं।", "मुझसे बड़े हैं"–इसके कारण उनमें स्वाभाविक ही एक बड़े–छोटे का संकोच बना रहता है। वह सोचता है कि श्रीकृष्ण "जब तक आज्ञा न दें तब तक मैं अपने आप किसी सेवा को कैसे करूं" अन्यथा "मेरी यह सेवा उनको अच्छी लगेगी या नहीं"–इस प्रकार का सम्भ्रम बना रहता है। लेकिन सख्य रति विश्वासमयी होती है। वे श्रीकृष्ण को अपने ही बराबर मानते हैं उनमें किसी प्रकार का संकोच नहीं रहता। वे श्रीकृष्ण की सेवा करते हैं और अपनी सेवा भी कराते हैं। खेल में वे कभी श्रीकृष्ण को अपने कन्धे पर बिठाते हैं तो कभी स्वयं उनके कन्धे पर चढ़ जाते हैं। अपना झूठा पदार्थ भी उनको खिलाते हैं यहाँ तक कि उनसे लड़ भी पड़ते हैं और दो चार खरी–खोटी भी सुनाते हैं। अतः इस सख्य रति में दास्य रति की अपेक्षा अधिक ममता बुद्धि होती है।

वात्सल्य रति–इस रति में उपरोक्त तीन रतियों के तीनों गुण तो विद्यमान रहते ही हैं एक चौथा गुण भी उपस्थित होता है वह है श्रीकृष्ण का पालक–भाव। वात्सल्य रति के भक्त श्रीकृष्ण को अपना पुत्र मानते हैं और अपने को उनका माता–पिता इत्यादि। अतः समय–समय पर उनकी चंचलता देखकर उनको डांटना–फटकारना भी स्वाभाविक ही है। वात्सल्य रति में जो दास्य रति का गुण सेवा रहती है उसका नाम सेवा नहीं रहता वरन् उसे पालन–पोषण कहा जाता है। इस वात्सल्य रस–समुद्र में श्रीकृष्ण भी मुग्ध हो जाते हैं और ऐसे परिकरों के वशीभूत भी हो जाते हैं।

मधुर रति–श्रीकृष्ण की प्रेमिकाओं अथवा कान्ताओं की जो रति होती है उसे मधुरा रति या कान्ता–रति कहते हैं। चार रतियों के चारों गुणों के अलावा इसमें एक और भी गुण है वह है निज–अंग द्वारा श्रीकृष्ण की सेवा। मधुरा रति सर्वश्रेष्ठ है और इसमें समस्त भावों का और गुणों का मिलन है। श्रीकृष्ण की कान्ता द्वारका की महारानियां श्रीरुक्मिणी–सत्यभामादि की मधुरा रति से व्रजगोपीवृन्द की मधुरा रति श्रेष्ठ कही गयी है और समस्त व्रजगोपियों में श्रीकृष्ण की अत्यधिक प्रिय श्री राधाजी की रति सर्वोत्कृष्ट कही गयी है।

भाव भक्ति का आविर्भाव भी दो प्रकार से हुआ करता है एक तो साधन में प्रवृत्ति से अर्थात् अनर्थों की निवृत्ति के बाद निष्ठा की भूमिका में आने पर और दूसरे श्रीकृष्ण या श्रीकृष्ण–भक्तों की कृपा से। लेकिन इन दोनों में प्रायशः साधन अभिनिवेश से ही भाव भक्ति की प्राप्ति हुआ करती है श्रीकृष्ण एवं श्रीकृष्ण भक्तों की कृपा जनित भाव–भक्ति को प्राप्त करने वाले तो कोई विरले भाग्यवान जन ही होते हैं साधन भक्ति की ही भाँति इस भाव भक्ति के भी वैधी एवं रागात्मिका दो भेद माने गये हैं।

वाह रे कलियुग!

श्रीरामचन्द्र कह गये सिया से
ऐसा कलियुग आयेगा।
जन्म हमारा कहाँ हुआ था
ये सुप्रीम कोर्ट बतलायेगा।।

वास्तु
एक दृष्टि में

साधारणतः वास्तु विज्ञान को किसी पुस्तक या लेख में समा देना लगभग असम्भव है। अपितु इस लेख के माध्यम से ये बताने का प्रयास अवश्य किया गया है कि अपने घर और व्यापारिक स्थल में क्या सावधानी बरत सकते हैं।

घर में :

1) पूर्वोत्तर (N/E) में शौचालय अथवा रसोई न हो।
2) पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण–पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
3) प्रमुख द्वार दक्षिण–पश्चिम (S/W) में न हो।
4) प्रधान शयनकक्ष दक्षिण–पूर्व (S/E) तथा पूर्वोत्तर में (N/E) न हो।
5) प्रधान शयनकक्ष दक्षिण–पश्चिम (S/W) में अथवा दक्षिण (S) में हो।
6) रसोई घर अग्नि कोण (S/E) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।
7) देव स्थान पूर्वोत्तर (N/E) अथवा पूर्व (East) में हों।
8) सीढ़ियाँ घड़ी नुमा (Clock wise) हों।
9) सारे प्रमुख द्वार (Clock wise) खुलें।
10) घर का प्रमुख द्वार उत्तर (N) या पूर्व (E) में हो।
11) शौचालय वायव्य कोण (N/W) में या पश्चिम (W) में हो।
12) जल स्थान, बोरिंग पूर्वोत्तर (N/E) में हो।
13) ओवर हेड टंकी दक्षिण–पश्चिम (S/W) में हो।
14) बहुमूल्य वस्तुएँ घर में दक्षिण–पश्चिम (S/W) में अलमारी अथवा तिजोरी में रखें।
15) सोते समय सिरहाना उत्तर (N) में कदापि न हो।

व्यावसायिक स्थल :

1) पूर्वाभिमुख तथा उत्तराभिमुख अर्थात् North Facing & East Facing द्वार ज्यादा उपयोगी है।
2) प्रधान (Head) का बैठने का स्थान दक्षिण पश्चिम (S/W) में होना चाहिए।
3) प्रयास रखें कि सारे कार्यकर्त्ता पूर्व (East) और उत्तर (North) की ओर मुँह करके बैठें।
4) नगदी हमेशा दक्षिण पश्चिम (S/W) में रखें।
5) Beam के नीचे न बैठें तथा यदि Beam हो तो Ceiling करा लें।
6) प्रयास रखें कि दक्षिण पश्चिम (S/W) थोड़ा ऊँचा हो।
7) व्यावसायिक स्थल के आगे कोई बड़ा पेड़ न हो।
8) व्यावसायिक स्थल का पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण–पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
9) मुनीम एवं प्रबन्धक इत्यादि पश्चिम में या दक्षिण में बैठें।
10) किसी भी हालत में शौचालय पूर्वोत्तर (N/E) में न हो (यह देव स्थान है)।
11) पीने का पानी पूर्वोत्तर (N/E) में रखें एवं पैन्ट्री (Pantry) अग्नि कोण (S/E) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।

उपरोक्त बातों में अनेकों अनेक पहलू अभी भी रह गये हैं। जब भी किसी नये घर या व्यावसायिक स्थल का चुनाव करना हो तो उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए भी विशेषज्ञ की सलाह अत्यन्त आवश्यक है।

व्रत-पर्व

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सं० 2067 मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

सूर्य दक्षिणायण • सूर्योदय 06/45 • सूर्यास्त 05/15 • हेमन्त ऋतु (ता० 06 दिसम्बर से 21 दिसम्बर 2010 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
06/12	सोमवार	प्रतिपदा (10.30)	ज्येष्ठा 06.38 सायं	मूल चल रहे हैं, चन्द्र धनु राशि पर सायं 06/28 तक, रूद्र व्रत (पिंडिया) ★
07/12	मंगलवार	द्वितीया (10.22)	मूल (07.01)	मूल समाप्त रात्रि 07/01 पर ★
08/12	बुधवार	तृतीया (10.47)	पू.षा. (07.54)	चन्द्र मकर राशि पर रात्रि 02/15 पर ★
09/12	गुरुवार	चतुर्थी (11.43)	उ.षा. (09.18)	भद्रा दिन में 11/15 से रात्रि 11/43 तक, **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** ★
10/12	शुक्रवार	पंचमी (01.08)	श्रवण (11.10)	**श्री राम-विवाह महोत्सव**, द्वितीया नाग पंचमी ★
11/12	शनिवार	षष्ठी (02.55)	धनिष्ठा (01.23)	चन्द्र कुम्भ राशि पर दिन में 12/16 पर श्रीस्कन्द षष्ठी 06 व्रत, **पंचकारम्भ** दिन में 12/16 से ★
12/12	रविवार	सप्तमी (04.58)	शतभिषा (03.52)	भद्रा रात्रि शेष 04/58 पर, **पंचक** ★
13/12	सोमवार	अष्टमी 60.00समस्त	पू.भा. (06.29)	भद्रा सायं 06/05 तक, चन्द्र मीन राशि पर 11/50 पर, **पंचक** ★
14/12	मंगलवार	अष्टमी 07.10 प्रातः	उ.भा. 60.00समस्त	**श्री नन्दा नवमी, पंचक** ★
15/12	बुधवार	नवमी 09.17	उ.भा. 09.03	रेवती के मूलारंभ प्रातः 09/03 से, **पंचक** ★
16/12	गुरुवार	दशमी 11.09	रेवती 11.23	चन्द्र मेष राशि पर दिन में 11/23 से **पंचक** समाप्त दिन में 11/23 पर, भद्रा रात्रि 11/56 से ★
17/12	शुक्रवार	एकादशी 12.43	अश्विनी 01.25	भद्रा दिन में 12/45 तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत सबका, श्री गीता जयंती**, मूल समाप्त दिन में 01/25 पर ★
18/12	शनिवार	द्वादशी 01.47	भरणी 02.59	चन्द्र वृष राशि पर रात्रि 09/16 से, **शनि प्रदोष 12 व्रत** ★
19/12	रविवार	त्रयोदशी 02.23	कृत्तिका 04.06	- ★
20/12	सोमवार	चतुर्दशी 02.27	रोहिणी 04.42	भद्रा दिन में 02/27 से रात्रि 02/10 तक, चन्द्र मिथुन राशि पर रात्रि 04/45 पर, **व्रत की पूर्णिमा, दत्तात्रेय जयंती** ★
21/12	मंगलवार	पूर्णिमा 02.01	मृगशिरा 04.48	स्नान-दान की पूर्णिमा ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2067 पौष कृष्ण पक्ष

सूर्य दक्षिणायण • सूर्योदय 06/47 • सूर्यास्त 05/13 • हेमन्त ऋतु (ता0 22 दिसम्बर से 04 जनवरी 2011 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
22/12	बुधवार	प्रतिपदा	आर्द्रा	- ★
		01.05	04.27	
23/12	गुरुवार	द्वितीया	पुनर्वसु	भद्रा रात्रि 10/55 पर, चन्द्र कर्क राशि पर दिन में 09/54 से,
		11.45	03.43	गुरु पुष्य योग दिन में 03/43 के पश्चात् ★
24/12	शुक्रवार	तृतीया	पुष्य	भद्रा दिन में 10/05 तक, **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी 04 व्रत,**
		10.05	02.38	चन्द्रोदय रात्रि 04/29 पर, श्लेषा के मूलारंभ दिन में 02/38 से ★
25/12	शनिवार	चतुर्थी	श्लेषा	मूल चल रहे हैं, चन्द्र सिंह राशि पर दिन में 01/17 से ★
		08.06प्रातः	01.17	
26/12	रविवार	षष्ठी	मघा	मूल समाप्त दिन में 11/45 पर, भद्रा रात्रि 03/37 से ★
		(03.37)	11.45	
27/12	सोमवार	सप्तमी	पू.फा.	भद्रा दिन में 02/25 तक, चन्द्र कन्या राशि पर दिन में 03/41 से ★
		(01.14)	10.06	
28/12	मंगलवार	अष्टमी	उ.फा.	अष्टका श्राद्ध ★
		(10.54)	08.25	
29/12	बुधवार	नवमी	हस्त	चन्द्र तुला राशि पर सायं 06/05 से, अनु-अष्टका श्राद्ध,
		(08.41)	06.49प्रातः	चित्रा समाप्त रात्रि 05/20 पर ★
30/12	गुरुवार	दशमी	स्वाती	भद्रा दिन में 07/40 से, सायं 06/39 तक ★
		06.39 सायं	(04.04)	
31/12	शुक्रवार	एकादशी	विशाखा	चन्द्र वृश्चिक राशि पर, रात्रि 09/22 से, **सफला एकादशी**
		04.53	(03.08)	**11 व्रत सबका** ★
01/01	शनिवार	द्वादशी	अनुराधा	**शनि-प्रदोष 12 व्रत,** इस्वी सन् 2011 का प्रारम्भ, ज्येष्ठा के
		03.27	(02.31)	मूलारम्भ रात्रि 02/31 से ★
02/01	रविवार	त्रयोदशी	ज्येष्ठा	मूल चल रहे हैं, भद्रा दिन में 02/24 से रात्रि 02/07 तक,
		02.24	(02.18)	चन्द्र धनु राशि पर रात्रि 02/18 से **मास शिवरात्रि 13 व्रत** ★
03/01	सोमवार	चतुर्दशी	मूल	मूल समाप्त रात्रि 02/35 पर, **श्राद्ध की अमावस्या** ★
		01.50	(02.35)	
04/01	मंगलवार	अमावस्या	पू.षा.	स्नान-दान की अमावस्या, भौमवती अमावस्या आज
		01.45	(03.22)	आज सूर्य ग्रहण ★

आज सूर्य ग्रहण है, देखे पृष्ठ सं. 20।

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सं0 2067 पौष शुक्ल पक्ष

सूर्य दक्षिणायण • सूर्योदय 06/46 • सूर्यास्त 05/14 • हेमन्त ऋतु (ता0 05 जनवरी से 19 जनवरी 2011 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
05/01	बुधवार	प्रतिपदा 02.14	उ.षा. (04.40)	चन्द्र मकर राशि पर दिन में 09/42 से ★
06/01	गुरुवार	द्वितीया 03.13	श्रवण (06.25)	- ★
07/01	शुक्रवार	तृतीया 04.38सायं	धनिष्ठा 60.00समस्त	भद्रा रात्रि 05/33 से, चन्द्र कुम्भ राशि पर 07/29 पर, पंचकारम्भ 07/29 पर ★
08/01	शनिवार	चतुर्थी 06.27सायं	धनिष्ठा 08.34	भद्रा सायं 06/27 पर, **वैनायिकी श्री गणेश चतुर्थी 04 व्रत**, **पंचक** ★
09/01	रविवार	पंचमी (08.32)	शतभिषा 11.00	पंचक ★
10/01	सोमवार	षष्ठी (10.43)	पू.भा. 01.37	चन्द्र मीन राशि पर प्रातः 06/58 पर, पंचक ★
11/01	मंगलवार	सप्तमी (12.49)	उ.भा. 04.12	भद्रा रात्रि 12/49 पर, मूलारम्भ सायं 04/12 पर, पंचक ★
12/01	बुधवार	अष्टमी (02.41)	रेवती 06.36सायं	भद्रा दिन में 01/45 पर, चन्द्र मेष राशि पर सायं 06/36 पर, **महा-भद्राष्टमी 08, बुधाष्टमी 08 व्रत**, पंचक समाप्त सायं 06/36 पर ★
13/01	गुरुवार	नवमी (04.12)	अश्विनी (08.44)	मूल समाप्त रात्रि 08/44 पर ★
14/01★	शुक्रवार	दशमी (05.14)	भरणी (10.23)	चन्द्र वृष राशि पर रात्रि 04/42 पर, **खरमास समाप्त**, **मकर-संक्रान्ति** रात्रि 12/31 पर ★
		मकर संक्रान्ति खरमास समाप्त		
15/01★	शनिवार	एकादशी (05.47)	कृत्तिका (11.36)	भद्रा सायं 05/30 से रात्रि शेष 05/47 तक, **पुत्रदा एकादशी 11 व्रत (स्मार्त्त)**, आज मकर संक्रान्ति का पुण्यकाल दिन में 04/31 तक ★
16/01	रविवार	द्वादशी (05.48)	रोहिणी (12.20)	पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव) ★
17/01	सोमवार	त्रयोदशी (05.20)	मृगशिरा (12.33)	चन्द्र मिथुन राशि पर दिन में 12/26 पर, **सोम प्रदोष 13 व्रत** ★
18/01	मंगलवार	चतुर्दशी (04.21)	आर्द्रा (12.17)	भद्रा रात्रि 04/21 पर ★
19/01★	बुधवार	पूर्णिमा (03.00)	पुनर्वसु (11.37)	भद्रा दिन में 03/41 तक, **स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, शाकम्भरी जयंती**, माघ मास के नियम आरम्भ, चन्द्र कर्क राशि पर सायं 05/47 से ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सं0 2067 माघ कृष्ण पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 06/40 • सूर्यास्त 05/20 • शिशिर ऋतु (ता0 20 जनवरी से 03 फरवरी 2011 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
20/01*	गुरुवार	प्रतिपदा (01.16)	पुष्य (10.37)	श्लेषा के मूलारम्भ रात्रि 10/37 से, गुरु पुष्य योग रात्रि 10/37 तक *
21/01	शुक्रवार	द्वितीया (11.18)	श्लेषा (09.19)	मूल चल रहे हैं, चन्द्र सिंह राशि पर रात्रि 09/19 से *
22/01	शनिवार	तृतीया (09.05)	मघा (07.49)	मूल समाप्त रात्रि 07/49 पर, भद्रा दिन में 10/11 से रात्रि 09/05 तक, **संकष्टी श्री गणेश 04 चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय रात्रि 08/23 पर *
23/01	रविवार	चतुर्थी 06.46सायं	पू.फा. 06.11सायं	चन्द्र कन्या राशि पर रात्रि 11/46 से *
24/01	सोमवार	पंचमी 04.24	उ.फा. 04.30	- *
25/01	मंगलवार	षष्ठी 02.04	हस्त 02.52	भद्रा दिन में 02/04 से रात्रि 12/58 तक, चन्द्र तुला राशि पर रात्रि 02/06 से *
26/01	बुधवार	सप्तमी 11.51	चित्रा 01.20	श्री रामानन्दाचार्य जयंती, **भारतीय गणतंत्र दिवस** *
27/01	गुरुवार	अष्टमी 09.51	स्वाती 12.02	चन्द्र वृश्चिक राशि पर रात्रि शेष 05/16 पर *
28/01	शुक्रवार	नवमी 08.05	विशाखा 10.59	भद्रा रात्रि 07/24 से *
29/01	शनिवार	दशमी 06.42प्रातः	अनुराधा 10.18	ज्येष्ठा के मूलारंभ दिन में 10/18 से, भद्रा समाप्त प्रातः 06/42 पर, **षट्तिला एकादशी 11 व्रत (स्मार्त्त)***
30/01	रविवार	द्वादशी (05.10)	ज्येष्ठा 09.59	षट्तिला एकादशी 11 व्रत (वैष्णव), चन्द्र धनु राशि पर दिन में 09/59 से, मूल चल रहे हैं *
31/01	सोमवार	त्रयोदशी (05.09)	मूल 10.11	मूल समाप्त दिन में 10/11 से, भद्रा रात्रि शेष 05/09 से, **सोम प्रदोष 13 व्रत** *
01/02	मंगलवार	चतुर्दशी (05.40)	पू.षा. 10.50	भद्रा सायं 05/24 तक, चन्द्र मकर राशि पर सायं 05/08 से, **मास शिवरात्रि 14 व्रत** *
02/02	बुधवार	अमावस्या 60.00समस्त	उ.षा. 12.01	**स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, मौनी अमावस्या** *
03/02	गुरुवार	अमावस्या 06.39प्रातः	श्रवण 01.39	चन्द्र कुम्भ राशि पर रात्रि 02/16 से, स्नान-दान की अमावस्या, **पंचकारम्भ रात्रि** 02/16 से *

*=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
द्वारा संचालित
सेवा प्रकल्प

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय पं. श्रीकृष्ण चन्द्र शास्त्री द्वारा संरक्षित श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, पूर्णतया कृष्ण सेवा के लिए समर्पित है। श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की आधार शाखा श्रीठाकुर जी के निवास स्थान श्रीभागवत कृपा निकुंज, रमणरेती, वृन्दावन में अवस्थित है, जहाँ से विभिन्न प्रकार के सेवा प्रकल्पों का संचालन किया जाता है।

विभिन्न सेवाएँ :

1, श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, वृन्दावन की अपनी सत्संग–शाला है, जो कि श्रीभागवत कृपा निकुंज के भूतल में अवस्थित है, यहाँ श्रीठाकुर जी भागवत प्रचार–प्रसार के लिए समय–समय पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ एवं विभिन्न प्रकार के सत्संग ज्ञान यज्ञ का आयोजन करते रहते हैं।

2. परिक्रमा मार्ग, रमणरेती स्थित 'श्रीभागवत धाम' में श्रीठाकुर जी विद्यार्थियों को समय–समय पर भागवत शिक्षा का पाठ पढ़ाते हैं। यह श्रीमद्भागवत विद्यालय है जिसकी पूरी देख रेख श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान करता है।

3. ब्रज एवं गिरिराज के सौंदर्यीकरण के लिए श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष अष्टोत्तरसहस्र 1008 श्रीमद्भागवत कथा का विशाल आयोजन होता है। इस वर्ष 26 फरवरी से यह आयोजन श्रीधाम वृन्दावन में हुआ। इस आयोजन से बची राशि से वृक्षारोपण, पेयजल व्यवस्था, मार्ग सौन्दर्यीकरण का कार्य श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा प्रतिपादित होता है।

4. श्रीराधा–माधव की कृपा से 'श्री भागवत आतिथेयम्' का निर्माण बड़े जोर पर है। प्रभु कृपा रही तो श्रीठाकुर जी इसका शुभोद्घाटन शीघ्र ही करेंगे। इस तीन मंजिले भागवत आतिथेयम् में वृन्दावन आने वाले भक्तों के ठहरने का उत्तमोत्तम प्रबन्ध होने जा रहा है। रमणरेती मार्ग पर श्रीभागवत कृपा निकुंज के ठीक सामने एवं फोगला आश्रम से ठीक पहले यह निर्माण हो रहा है।

5. श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान के तत्वावधान में श्रीठाकुरजी समय–समय पर भारत के विभिन्न वनवासी, पिछड़े या प्राकृतिक आपदाओं से ग्रसित क्षेत्रों के लिए निःशुल्क श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन करते हैं, जिससे प्राप्त राशि उन क्षेत्रों की सेवाओं पर समर्पित होती है।

6. श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान समय–समय पर सामूहिक यज्ञोपवीत एवं वैवाहिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। जिसका जरूरत मंद भक्त लाभ उठा सकते हैं।

7. वृन्दावन स्थित श्रीभागवत गौशाला में गोपालन बड़े ही **श्रद्धाभाव से होता** रहता है।

8. अप्रैल 2009 में कलकत्ता प्रवास के मध्य श्रीठाकुर जी ने 'श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान' की कोलकाता शाखा का शुभोद्घाटन किया जो कि भारत के पूर्वी क्षेत्रों में आयोजित संस्थान के कार्यक्रमों की देखभाल करेगी।

आप किसी भी रूप से इस संस्थान से जुड़ना चाहते हैं, तो सम्पर्क कर सकते हैं–

पं. लक्ष्मीकान्त शर्मा, वृन्दावन
09837008073

पं. बिष्णु पाठक सारस्वत, कोलकाता
09331033090

श्रीश्यामबाबा खाटू जी धाम, राजस्थान में आयोजित विशाल अष्टोत्तरशत श्रीमद्भागवत कथा में पोथी यजमान बनने हेतु एवं कथा यज्ञ में किसी भी सेवार्थ सम्मिलित होने हेतु निम्नलिखित भक्तवृन्द से सम्पर्क करें.

कोलकाता
श्रीमती उमा पाठक 9330125822
श्रीसुभाष मुरारका 9831011009
श्रीमहेन्द्र केजरीवाल 9831015439
श्रीविश्वनाथ केशान 9331047161
श्रीप्रदीप अग्रवाल 9831226509

हावड़ा
श्रीअंजनी मूँधड़ा 9331120823

रिसड़ा
श्रीप्रकाश शर्मा 9748149382

कासिम बाजार
श्रीमती दीपा झँवर 9333312649

पटना
श्रीशरद चन्द्र 9334499000

राँची
श्रीराजेश शर्मा 9334709924

कटक
श्रीदेवकीनन्दन जोशी 9437026760

भुवनेश्वर
श्रीमती रूपा घोष 9937016092

दिल्ली
श्रीराकेश मीना अग्रवाल 9873646469
श्रीओमप्रकाश बागला 9810969812
श्रीघनश्याम वशिष्ठ 9818877768
श्रीमती अनीता बाटला 9818056840
श्रीराजकुमार वर्मा 9810822296
श्रीविकास खन्ना 9311138588

यमुना नगर
श्रीरामनिवास गर्ग 9812037746
श्रीराजेश मित्तल 9896340703

गुड़गाँव
श्रीमहावीर भारद्वाज 9958954888

फरीदाबाद
श्रीयादराम शर्मा 9818061770

मथुरा
श्रीगिरिराज किशोर सक्सेना 9837088882

वृन्दावन
श्रीमती बृजबाला गौड़ 9359330505
श्रीरामरतन शास्त्री 9528849166

मेरठ
श्रीभुजवीर सिंह 9690807371

जयपुर
श्रीबाबूलाल अग्रवाल 9829072023
श्रीभजनलाल अग्रवाल 9829017017
श्रीगोविन्द अग्रवाल 9001335000
श्रीराजू खण्डेलवाल 9309264776
श्रीप्रेम पाठक 9799811011

खाटू श्यामजी
श्रीश्याम कला भवन 01576230081

मुम्बई
श्रीसंजय लाहोटी 9820967881

सूरत
श्रीराजकुमार कोकड़ा 9824101558
श्रीबाबूलालजी मित्तल

बेंगलोर
श्रीप्रवीण पोद्दार 9845165217

मदुरई
श्रीकिशन गोयनका 9443052734

रायपुर
श्रीनिरंजन जिंदल 9826140006

कानपुर
श्रीअजीत ओझा 9336774319

सम्पूर्ण भारत से : श्रीबिष्णु पाठक 09331033090, श्रीलक्ष्मीकान्त शर्मा 09837008073

प्रत्येक पोथी पारायण का सेवा शुल्क रु. 15000/- (पन्द्रह हजार रुपये मात्र)

प्रत्येक पोथी यजमान को दी जाने वाली सुविधाएँ -

विद्वान पण्डित द्वारा श्रीमद्भागवत कथा का मूलपाठ (वर्ण, दक्षिणा, भोजन इत्यादि सहित)

दो व्यक्तियों के आठ दिनों की रहने एवं भोजन की पूर्ण व्यवस्था

'ठाकुरजी' द्वारा प्रत्येक पोथी यजमान को संस्थान की ओर से स्मृति चिह्न एवं श्रीश्याम बाबा का विशेष प्रसाद

प्रत्येक पोथी यजमान के कथा स्थल पर बैठने की विशेष व्यवस्था

प्रत्येक पोथी यजमान को कथा पूर्ण होने के साथ ही सम्पूर्ण कथा की डी.वी.डी. सेट उपहार स्वरूप

श्रीखाटूश्यामजी

सादर आमंत्रण

विशाल अष्टोत्तरशत 108 श्रीमद्भागवत पारायण एवं कथा ज्ञान यज्ञ

दिनांक : 5 मार्च से 12 मार्च 2011 पर्यन्त
फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा से सप्तमी पर्यन्त

स्थान : खाटूश्यामजी (राजस्थान)

व्यासपीठ पर विराजमान होंगे

विश्वविख्यात भागवत भास्कर श्रीकृष्णचन्द्र जी शास्त्री (ठाकुरजी)
श्रीधाम वृन्दावन

Harinam9837031415

आयोजक : श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन - सम्पर्क सूत्र : 09331033090, 09758970427

श्रीमद्भागवत संदेश

कार्यालय : श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
श्रीभागवतकृपा निकुंज, रमणरेती मार्ग, वृन्दावन-281121 (मथुरा)

सदस्यता शुल्क – पंचवर्षीय : 500 रुपये • आजीवन : 1500 रुपये • एक प्रति : 20 रुपये